@MahiSandesh MAHI SANDESH https://www.facebook.com/hindimagazinemahi/

साहित्यिक और सामाजिक मूल्यों की मासिक पत्रिका

माही संदेश

जब तान छिड़ी
मैं बोल उठा
जब थाप पड़ी
पग डोल उठा
औरों के स्वर में
स्वर भरकर
अब तक गाया तो
क्या गाया?

हरिशंकर परसाई

वर्ष : 1 अंक : 7 अक्टूबर : 2018 पृष्ठ संख्या : 32 मूल्य : 35/-

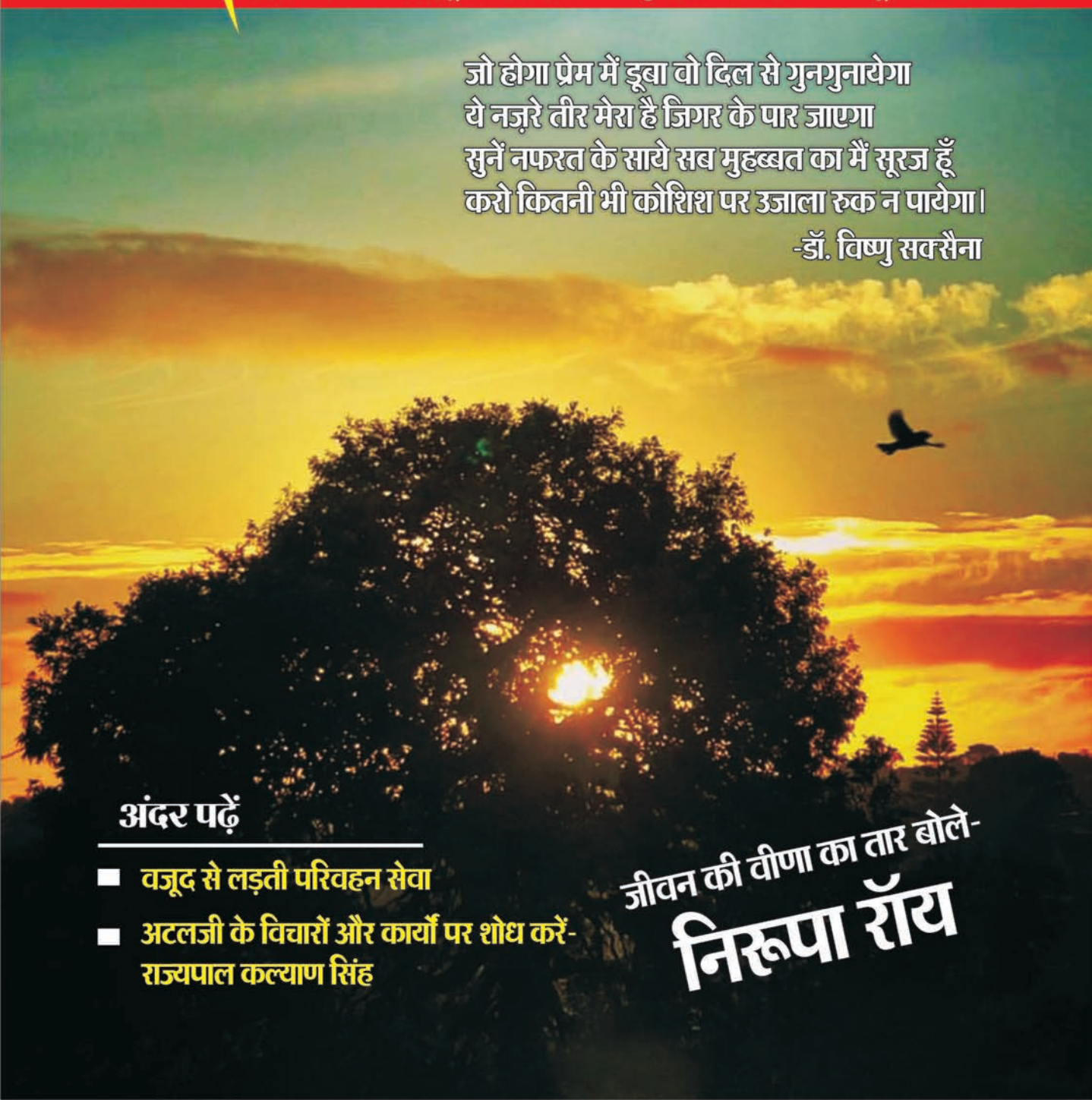

जो होगा प्रेम में डूबा वो दिल से गुनगुनायेगा
ये नज़रे तीर मेरा है जिगर के पार जाएगा
सुनें नफरत के साये सब मुहब्बत का मैं सूरज हूँ
करो कितनी भी कोशिश पर उजाला रुक न पायेगा।

-डॉ. विष्णु सक्सैना

अंदर पढ़ें

- वजूद से लड़ती परिवहन सेवा
- अटलजी के विचारों और कार्यों पर शोध करें- राज्यपाल कल्याण सिंह

जीवन की वीणा का तार बोले-
निरूपा रॉय

माही संदेश

राष्ट्रीय पत्रिका

जब ये खत पढ़े जाएंगे तो आप जरूर मुस्करायेंगे

वो जमाना जब निगाहें दरवाजे पर डाक बाबू की राह तकतीं थीं आज यही निगाहें इंटरनेट के युग में व्हाट्सएप, फेसबुक, मैसेंजर में उलझी हुई गुमसुम सी नजर आती हैं, जो सुकून और उत्सुकता डाक बाबू की लाई चिट्ठी को बार-बार पढ़ने में महसूस होती थी, आज इंटरनेट के युग में बस फीकी सी मुस्कान में बदल गई है

आओ फिर से हम एक-दूसरे को चिट्ठी लिखें...

हमारा पता :

50-51 ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021 (राजस्थान)।

एक तुम्हारे होने ने
जीवन को
गुलज़ार किया है
सुनो हमारी
प्यारी बिटिया
तुमने घर को
संसार किया है

Happy Birthday

जन्मतिथि- 31 अक्टूबर 2015

Happy Birthday

हमारी प्यारी बिटिया माही को
जन्मदिवस की अनगिनत शुभकामनाएं,
आप यूँ ही जीवन पथ पर आगे बढ़ते रहें
स्नेह भरे आशीष के साथ आपके अपने

श्री बालकृष्ण- श्रीमती दयावती (दादा-दादी)
श्री गणपत- श्रीमती तारा (नाना-नानी)
श्री रोहित- श्रीमती माला (पापा-माँ)
श्री रविन्द्र- श्रीमती पूजा (मौसा-माँसी)
श्री एकेश्वर- श्रीमती रूबी (चाचा-चाची)
प्रिय पीहू, सानवी, आदित्य (बहिन-भाई)
श्री राजपाल- श्री यतेंद्र (मामा)
श्री दीपक (चाचा) एवं समस्त परिवार

संपादक की कलम से....

रोहित कृष्ण नंदन

प्रधान संपादक
माही संदेश

माही संदेश पत्रिका का यह 7वां अंक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें बेहद खुशी है, शब्दों की उंगली थामकर हम धीमे-धीमे आपके दिल तक पहुंच रहे हैं।

दिल तक पहुंचना आसान नहीं होता, एक उम्र बितानी पड़ती है इसके लिए और वैसे भी ये चुनावी वर्ष है तो राजनीतिक दल भी लगे हुए हैं अपने-अपने तरीके से दिल के जोड़-तोड़ की राजनीति करने में।

एक नजर डालें कुछ ऐसे ही दृश्यों पर तो हाल ही निर्वाचन आयोग ने चुनाव प्रचार का समय रात 10:00 बजे समाप्त होने के बाद अब सोशल मीडिया से प्रचार पर भी रोक लगा दी है, जो कि प्रत्याशी की गले की घण्टी बन सकता है, अब प्रत्याशी एसएमएस व्हाट्सएप या फोन से भी प्रचार नहीं कर पाएगा। निजता के अधिकार का हवाला देते हुए आयोग द्वारा जारी किए गए इस फरमान का कड़ाई से पालन हो तभी यह संभव है वरना नियम तो पहले भी बनते रहे हैं।

इसी बीच हाल ही कोटा में आयोजित किए गए शक्ति केंद्र सम्मेलन में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह भी तेवर में नज़र आये और बोले कि राहुल एण्ड कंपनी दिन में सपने देखती है, बात आपकी सही भी है 60 साल से देखे भी हैं और दिखाए भी, लेकिन अमित शाह एण्ड कंपनी भी आजकल स्वप्नद्रष्टा से कम नहीं है, अब देखते हैं कि ये जनता किसके स्वप्न फलित होते देखना तय करती है।

अब इन दिनों चर्चा में रहने वाले राजस्थान सरकार में पीडब्ल्यूडी मंत्री यूनुस खान ने कहा है कि बिना हेलमेट बाइक चलाने पर सचिन पायलट व अशोक गहलोत को नोटिस दिया जाएगा पर जनता में तो यह भी चर्चा है कि राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे व देश के गृहमंत्री राजनाथ सिंह भी बिना हेलमेट बाइक की सवारी करते नज़र आये हैं तो क्या नोटिस उधर भी पहुँचेगा।

जब राजस्थान की बात चली है तो यह बात भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि राजस्थान में चुनाव होने में तकरीबन दो माह बाकी हैं लेकिन राजस्थान सरकार 3,000 करोड़ रुपए के अधूरे प्रोजेक्ट जनता को सौंपने की तैयारी कर रही है और इन सभी प्रोजेक्ट्स का चुनाव से पहले उद्घाटन होना तय है, शायद सरकार को ये भी शंका हो कि अगली बार मौका मिले या न मिले तो उद्घाटन तो कर ही देना चाहिए क्योंकि जनता कब किसको क्या मौका दे या छीन ले ये तो सिर्फ वो ही जानती है।

माही संदेश पत्रिका आपके दिल की आवाज बनकर यूं ही जन-जन तक पहुंचती रहेगी बस आपका स्नेह बना रहे।

शेष फिर...

एक नजर यहां भी

जय जवान
बने एक फौजी रहे आजीवन विजेता — **जालाराम चौधरी** 5

नमन
प्रेमचन्द की कर्मठता और सहिष्णुता — **डॉ. महेश चन्द** 7

सिनेमा संदेश
जीवन की वीणा का तार बोले-निरूपा रॉय — **शिशिर कृष्ण शर्मा** 8

अपनी भाषा
हिन्दी ने बढ़ाया मान — **भावना कल्याणी** 11

जन नायक
लौह पुरुष स्टैचू ऑफ यूनिटी
असाधारण व्यक्तित्व असाधारण तथ्य — **नित्या शुक्ला** 12

सेहत-संदेश
होम्योपैथी द्वारा मौसमी बीमारियों का निदान — **लुभावना शर्मा** 14

यथार्थ
अटलजी के विचारें और कार्यों पर शोध करें-राज्यपाल 16

तकनीकी ज्ञान
साइक्वर वुलिंग — **भारती ठाकुर** 17

कहानी
दहेज की बदलती तस्वीर — **नीरज त्यागी** 19
सांची — **रेखा चटर्जी** 20

मन की बात
पिता के नाम बेटे का खत — **नवीन जैन** 21

मुद्दा
वजूद से लड़ती परिवहन सेवा — **नारायण बारेठ** 23

उपन्यास
उड़ती चील का अण्डा — **डॉ. मदन लाल शर्मा** 23

काव्य-कलम 24-26

गतिविधियां 27-29

नमस्कार
तेरा-मेरा प्यार अमर — **रमन सैनी** 30

आवरण चित्र - प्रीता व्यास*

विभिन्न अखबार व पत्रिकाओं में बतौर संपादक एक लम्बी पारी खेलने के बाद एक बार फिर रेडियो में (समाचार विभाग-न्यूजीलैंड में) कार्यरत, अब तक इनकी 175 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

नवम्बर अंक : बाल विशेषांक

नवंबर माह में आ रहा है माही संदेश पत्रिका का बाल विशेषांक बच्चों से जुड़ी कहानियां, कविताएं, कवर स्टोरी, आलेख, आदि आमंत्रित हैं

क्लब-सोसाइटी, विभिन्न प्रकार की सामाजिक गतिविधियां, वर्कशॉप, सेमिनार, आदि विभिन्न प्रकार के इवेंट्स से जुड़ी ख़बर माही संदेश पत्रिका को भेजिये।

अंतिम तिथि 10 अक्टूबर, 2018

साथ में संक्षिप्त परिचय, छायाचित्र भी भेजें

रचनाएं ई-मेल करें
mahisandesh31@gmail.com
mahisandesheditor@yahoo.com
दूरभाष एवं व्हाट्सएप
9887409303
संपादक
माही संदेश

शहीद रमेश चौधरी

बने एक फौजी रहे आजीवन विजेता

युवाओं के लिए प्रेरणा बने रमेश चौधरी

शहीद रमेश चौधरी के भाई जालाराम चौधरी की कलम से-

जुनून की साक्षी तस्वीरों में
मेरे भाई का नाम शीर्ष स्थान
पर होगा।
महफूज है सरहद हमारी तुम
जैसे वीरों से!
सुन हमला देश के ऊपर
बंदूक उठा चल देता हूं,
क्यों पीछे हटूं मैं अपना खून
अपने वतन को देता हूं।

सिरोही जिले की रेवदर तहसील के नागाणी गांव में भाई रमेश चौधरी का जन्म हुआ। बचपन से लेकर रमेश की आंखों में कभी भी खौफ नहीं दिखा। नागाणी गांव के ही विद्यालय में उनकी शिक्षा हुई बचपन से ही आंखों में एक ही सपना मुझे सेना में जाना है। देश की रक्षा करनी है इसीलिए मेरा जन्म हुआ। उन्होंने पुलिस, प्रशासन, बैंक और अन्य सेवाओं की परीक्षाओं को कभी भी प्राथमिकता नहीं दी लक्ष्य केवल और केवल सेना। हर नये सूरज के साथ कसम खाकर अपने इष्ट देव राजाराम जी महाराज को स्मरण कर के मेहनत करना ही लक्ष्य माना। गांव में स्कूल शिक्षा पूर्ण करने के बाद रमेश कुमार ने 2010 में सिरोही के राजकीय महाविद्यालय में एडमिशन लिया यहां पर एनसीसी ज्वॉइन की। जुनूनी कैडेट के साथ ही कैम्पस के कारण और आर्मी से लगाव बढ़ गया और सी सर्टिफिकेट में ए ग्रेड पाया। रमेश कुमार के माता-पिता उसके आर्मी में जाने के निर्णय पर तैयार नहीं थे लेकिन देश के प्रति उसकी भावना के आगे उन्हें भी मजबूर होना पड़ा। गांव से 12वीं कक्षा पास करने के बाद सिरोही से ग्रेजुएशन की। सिरोही के सारणेश्वर रोड स्थित आंजणा कलबी समाज के न्यू बिल्डिंग का कमरा नंबर 20 की दीवारें आज भी शहीद रमेश कुमार की यादें बयां कर रही हैं। इस रूम की दीवार और दरवाजे पर भारतीय सेना का प्रमोशनल पोस्टर भी लगा हुआ है जो इस बात की गवाही देता है कि रमेश चौधरी में देश सेवा के लिए आर्मी का हिस्सा बनने का कितना जुनून था जुनूनीयत का आलम यह था कि शुरू से ही अपने को फिट रखते थे इसी कारण सिरोही राजकीय महाविद्यालय में एडमिशन लेते ही एनसीसी ज्वॉइन की। जुनूनियत इस हद तक थी कि जिम का सामान नहीं होने पर लकड़ी पर पत्थर बांध कर वेटलिफ्टिंग और डंबल जैसे जिम इक्यूपमेंट बनाकर वर्जिश करते थे। सभी मित्र दूसरी प्रतियोगिताओं की तैयारियां करते थे लेकिन रमेश चौधरी में आर्मी का जुनून था। रोज अरविंद पवेलियन में फिजिकल की तैयारी करना मेडिकल के लिए खुद को स्वस्थ रखना नित्यक्रम में शामिल था। पहली बार मेडिकल में अनफिट होने के कारण सेलेक्ट नहीं हो पाए, दूसरी बार

मेडिकल भी क्लियर किया और भर्ती हो गए। एक ही लक्ष्य था सेना वो सपना साकार हो गया जून 2013 में बाड़मेर रैली से चयन हो गया। पोस्टिंग जम्मू कश्मीर में हुई शहीद रमेश चौधरी शहीद होने से पहले 1 महीने सिरोही में थे 15 अगस्त को भी यहीं थे। रमेश हमेशा कहते थे कि जम्मू-कश्मीर में जीवन की अनिश्चितता है ऐसे में इस दौरान शादी करता है और उसे कुछ हो जाता है तो किसी लड़की के जीवन के साथ खिलवाड़ और अन्याय होगा रमेश को जितना सम्मान अपनी मातृभूमि और परिवार के लिए था उतना ही सम्मान नारी शक्ति के रूप में उनकी अर्धांगिनी बनने वाली युवती के प्रति भी था। इसी का परिणाम कि वह जम्मू-कश्मीर के अनिश्चितता भरे माहौल में पोस्टिंग के दौरान शादी नहीं करना चाहते थे रमेश ने बताया कि सेना के सेवाकाल में 4 साल जम्मू कश्मीर में निकालना होता है। वह 4 साल पूर्ण करते ही दूसरे स्थान पर पोस्टिंग होगी तब शादी करेगा जबकि उसकी सगाई पोसिन्द्रा में करीब 10 साल पहले ही हो चुकी थी। 13 नवंबर को उनकी शादी थी 20 दिन पहले ही रक्षाबंधन पर उनकी बहनों से राखी बंधवाने के लिए 1 महीने की छुट्टी लेकर आए थे। 19 अगस्त को वापस जम्मू के लिए रवाना हुए थे। वे 22 जुलाई को अपने गांव आए थे। 15 अगस्त को गांव के स्कूल में स्वतंत्रता दिवस के समारोह में शरीक हुए थे। रमेश ने अपने मित्रों को बताया कि वहाँ दो बार हमले हुए थे वह बाल-बाल बचे वहाँ की हालत बेहद खराब है कब और कहां आतंकी हमला हो जाए बता नहीं सकते और अगले ही दिन शनिवार को 8 घण्टे की मुठभेड़ में घाटी में घुसे आतंकियों को मार गिराया तभी रमेश को सीने में धड़ाधड़ गोलियां लगी वो दोनों हाथ फैलाकर अपनी मां को सीने से लगा कर सदा-सदा के लिये सो गये। शहीद रमेश कुमार के जुनून की साक्षी

है सेना की तस्वीरें। नागाणी के इस सपूत में हमेशा ही सेना का हिस्सा बनने का जज्बा रहा और भारतीय सेना के ध्येय वाक्य 'बनो एक फौजी, रहो आजीवन विजेता' अपनी शहादत देकर साकार कर दिया। सेना में भर्ती के बाद जब भी गांव आए युवाओं में देश प्रेम का जज्बा भरते रहे। युवाओं को कई गुर, फिट रहने और सेना के नियमों की जानकारी देते थे। आज गांव से रमेश चौधरी से प्रेरणा लेकर 15-20 युवा सेना की तैयारी में जुटे हुए हैं और दो सेना में चयनित हैं, कार्यरत हैं। जम्मू-कश्मीर के पुंछ इलाके में आतंकियों से मुठभेड़ में शहीद रमेश चौधरी का पार्थिव शरीर उनके पैतृक गांव नागाणी पहुंचा। इसके बाद राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। रमेश कुमार की शहादत ने संपूर्ण देश को गौरवान्वित किया है। 9 महीने कोख में रखकर अपने बेटे के लिए सपने बुनने वाली मां और बेटे के जीवन को लेकर हर पल चिंतित रहने वाले शहीद के पिता बाबूराम को पहले तो यह दुखद हादसा छिपाया गया। बड़े भाई किसना राम को पहले जानकारी मिल गई थी मंजला भाई वजाराम। रमेश भाइयों में सबसे छोटा था मिलनसार और मृदुभाषी स्वभाव होने के कारण सबका प्रिय भी। जब यह घटना पिता के साथ रमेश के ससुराल में भी फैली थी उनकी मंगेतर के शादी के सपनों को आग लग गयी। तिरंगे में लिपटा हुआ शव जब नागाणी गांव में प्रवेश किया तो हर किसी की आंखें नम हो गई। शव आने से पहले ही माता-पिता को उनके बेटे के शहीद होने की जानकारी दी गई जैसे ही शव घर पहुंचा घर की चौखट पर खड़े पिता फफक उठे, माता दलू देवी का हाल लिखा नहीं जाता। बड़ी बहन गंगा देवी ने नम आंखों से पिता बाबूलाल को संभाला उसने कहा आप रोए नहीं मेरा भाई अमर हुआ है पिता से कहा कि उनके बेटे ने देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी हैं मेरा भाई शेर है। बहादुर बेटी की बात सुनकर पिता ने अपने आप को संभाला तथा बेटे का माथा चूमकर अंतिम विदाई दी। बड़े भाई किसना राम ने मुखाग्नि दी। गांव के मुख्य मार्ग से गुजरी शव यात्रा का ग्रामीणों ने जगह-जगह पुष्प वर्षा से स्वागत कर शहीद को अंतिम विदाई दी। शव यात्रा में करीब 10,000 लोगों की 2 किलोमीटर लंबी शवयात्रा गली-मोहल्लों से लेकर घर की छतों पर खड़े लोगों ने शहीद को नमन किया। शहीद के ताबूत को फूल मालाओं से लाद दिया। शहीद रमेश कुमार चौधरी अमर रहे के जयकारों ने वातावरण देश भक्ति के रंग में रंग दिया। हर तरफ शहादत की चर्चा होगी, नाम अमर कर गया गर्व से कहता हूं मेरा भाई जिंदाबाद मेरा भाई जिंदाबाद और लिखने की मेरे पास हिम्मत नहीं हैं तुम्हारी वीरता की मिशाल हर पीढ़ी के लिये प्रेरणा होगी।

जब तक सूरज चाँद रहेगा
मेरे भाई का नाम रहेगा।।

जालाराम चौधरी
सैन्य मामलों में जानकार, स्वतंत्र लेखक।

प्रेमचन्द की कर्मठता और सहिष्णुता

प्रेमचन्द जन्मजात कर्मठ और सहिष्णु थे। प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई सन् 1880 को बनारस से चार मील दूर लमही गाँव में हुआ था। वे जीवन के निरन्तर कष्ट झेलते हुए इस संसार से 56 वर्ष की अवस्था में ही 8 अक्टूबर 1936 में बनारस को अलविदा कहकर चले गए।

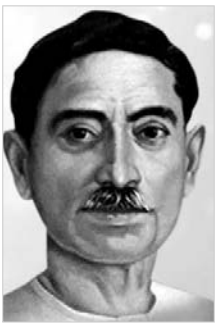

उनके पिता अजायबराय डाकखाने में मामूली नौकर थे। उनकी माता का नाम आनन्दी देवी था। प्रेमचन्द का बचपन का नाम धनपतराय था। उन्हें नवाबराय और मुंशी प्रेमचन्द के नाम से भी जाना जाता है। वे गरीबी में पले । बालक धनपतराय जब केवल 8 साल का था तब माता का देहान्त हो गया। पिता ने दूसरी शादी कर ली किन्तु उन्हें विमाता से स्नेह न मिला। घर में भयंकर गरीबी थी। फटे हाल रहना पड़ता था। उनकी पहली पत्नी उन्हें छोड़कर चली गई वह उम्र में उनसे बड़ी थी तब उन्होंने बाल विधवा शिवरानी देवी से विवाह किया । उनकी तीन संतानें थीं-श्रीपत राय, अमृत राय और कमला देवी श्रीवास्तव। प्रेमचन्द ने अपने अंत तक काम किया ।

उन्होंने बचपन से ही कष्ट सहन किये थे और कभी कर्तव्य से मुख नही मोड़ा था।' उनकी पत्नी उनसे आराम करने के लिए कहती थीं,परन्तु वह समझते कि बिना कठिन परिश्रम के जीवन निष्क्रिय और निरर्थक हो जायेगा। वह मधुमक्खी की भांति जीवन भर व्यस्त तो रहे , लेकिन मधु का संचय नहीं कर सके । उनकी सेहत नाजुक थी, उनका शरीर दुबला पतला और उनका भोजन ताकती चीजों से हीन था प्रकृति की बार बार चेतावनियों के बावजूद वह काम करने में डूबे रहे।[1]

इसी कारण उनको कलम का मजदूर और कलम का सिपाही भी कहा जाता है। जिसके कारण उन्हाने हिन्दी साहित्य में 'नाटक 'कर्बला 1928 में लिखा, उपन्यास लिखे- 'सेवासदन 1918, प्रेमाश्रम 1922, रंगभूमि 1925, कायाकल्प 1926, गबन 1931, कर्मभूमि 1933, गोदान 1935, मंगलसूत्र- अधूरा है, उनकी लगभग 300 कहानियाँ मानसरोवर के एक से आठ भाग में हैं, उन्होंने माधुरी1922, जागरण 1932 , हंस1930 पत्रिकाओं का संपादन कार्य भी किया।'[2] उन्होंने निबंध, बाल साहित्य व मुक्तक विचार भी लिखे।

उनकी यह कर्मठता और सहिष्णुता अपने लिए नहीं थी। वह तो निष्काम भावना से दूसरों का उपकार करते रहे। उन्होंने जो कुछ भी किया वह ' बहुजन हिताय ' ही था क्योंकि प्रेमचन्द बड़े सीधे और सादा आदमी थे। वह खुले गले का खादी का कुरता और साफकिन्तु ढीली ढाली धोती पहनते थे। देखने में वह किसी भी तरह बड़े नहीं जान पड़ते थे। उनके पीले और धंसे हुए गालों पर झुर्रियां पड़ गयी थी जो कष्ट और मेहनत की सूचक थीं। भाग्य कदाचित उनके अनुकूल कभी नहीं रहा। उन्होंने सदैव बालकों जैसा भोलापन और सरलता दिखाई।

उनका दूसरों के हृदय को मोह लेने वाला आचरण , उनका सीधा साधा ढंग ,उनका सहज बरताव- इन सब बातों ने उनको अपरिचित और परिचित की दृष्टि में उठा दिया था।

वास्तव में ही प्रेमचन्द दरिद्रनारायण, दीनबन्धु और दीनानाथ थे। उनके जीवन का ध्येय था-

आदमी को रंज से हरगिज
न डरना चाहिये।
करके हिम्मत राह मेहनत से
गुजरना चाहिये।
काम आयेंगी ये तकलीफें व
सौबत एक दिन।
देख लेंगे मंजिलें मकसद की
सूरत एक दिन ।

प्रेमचन्द ने अपार कष्ट सहकर भी कर्मठता से मुँह नहीं मोड़ा। शरीर मरता गया पर मन न मरा। उन्होंने मरते दम तक काम से हार नहीं मानी । प्रेमचन्द ने इन्द्रनाथ मदान को एक पत्र में लिखा था कि मेरे निकट जीवन को सदा काम करना ही रहा है । वह काम करने में ही सुख का अनुभव करते थे । उनके जीवन में निराशा के ऐसे क्षण भी आए, जब उन्हें आर्थिक अभाव ने आ घेरा , लेकिन वह अपने भाग्य से सदा सन्तुष्ट ही रहे । उन्होंने अनुभव किया कि वह जितना कुछ चाहते थे उससे अधिक उन्हें मिला हुआ था।[3]

इस वर्णन से स्पष्ट है कि प्रेमचन्द की कर्मठता और सहिष्णुता उनको जीवन संघर्ष और कलम के क्षेत्र में मजदूर और सिपाही बना देती है।

संदर्भ ग्रंथ-

1. प्रेमचन्द एक विवेचन - इन्द्रनाथ मदान , टि.1 पृ.20
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डा.नगेन्द्र -पृ 554, 558, 587,588.
3. प्रेमचन्द एक विवेचन - इन्द्रनाथ मदान, टि. 3.4 पृ 11 .17.18।

डॉ. महेश चन्द

स्वतंत्र लेखक

जीवन की वीणा का तार बोले-निरूपा रॉय

हिंदी सिनेमा में मां का जिक्र होते ही जो पहला चेहरा जहन में उभरता है, वो है निरूपा रॉय का। 1970 और 1980 के दशक के दर्शकों के जहन में निरूपा रॉय की छवि भले ही उस दौर की फिल्मी मां की हो लेकिन हिंदी सिनेमा के सुनहरे दौर के दर्शक इस बात से वाकिफ़ हैं कि इस अभिनेत्री ने अपने करियर की शुरूआत बतौर हिरोईन की थी और वो अपने दौर की कामयाब हिरोईनों में गिनी जाती थीं। यही नहीं, 'जीवन की वीणा का तार बोले', 'आ लौट के आजा मेरे मीत', 'जरा सामने तो आओ छलिए', 'मेरा छोटा सा देखो ये संसार', 'चाहे पास हो चाहे दूर हो', 'ढलती जाए रात', क्यों मिले तुम हम' और 'मैं यहां तू कहां, मेरा दिल तुझे पुकारे' जैसे जबर्दस्त हिट गीत भी निरूपा रॉय पर ही फिल्माए गए थे।

निरूपा रॉय से मेरी मुलाकात दक्षिण मुंबई के नेपियनसी रोड स्थित एम्बेसी अपार्टमेंट के उनके घर पर हुई थी। ग्राऊंड फ्लोर के 3 फ्लैट्स से मिलकर बना उनका बड़ा सा घर, उसके पीछे अरब सागर के किनारे बहुत बड़ा लॉन, लॉन में हर तरफ सजी संगमरमर की बेहद खूबसूरत मूर्तियां, बातचीत में कब 4 घंटे गुजर गए, पता ही नहीं चला। निरूपा रॉय का जन्म 4 जनवरी, 1931 को गुजरात के वलसाड शहर में एक परंपरावादी गुजराती 'चौहान' परिवार में हुआ था। पिता रेलवे में नौकरी करते थे और परिवार में माता-पिता के अलावा निरूपा रॉय और उनकी एक बहन थी। निरूपा रॉय का असली नाम कांता था लेकिन माता-पिता उन्हें प्यार से 'छिबी' कहते थे। स्कूली पढ़ाई के दौरान साल 1945 में, महज 14 साल की उम्र में उनकी शादी हुई और वो कांता चौहान से श्रीमती कोकिला बलसारा बनकर मुंबई चली आयीं। उनके पति कमल बलसारा राशनिंग इंस्पेक्टर की नौकरी पर थे लेकिन एक्टिंग का उन्हें बेहद शौक था जो पूरा नहीं हो पा रहा था।

निरूपा रॉय के मुताबिक, उनकी शादी हुए 3-4 महीने ही बीते होंगे कि उनके पति की नजर 'सनराईज पिक्चर्स' के, गुजराती फिल्म 'राणक देवी' के लिए नए चेहरों की तलाश से संबंधित एक विज्ञापन पर पड़ी, जिसके लिए उन्होंने आवेदन कर दिया। इंटरव्यू के लिए बुलावा आया तो निरूपा रॉय भी पति के साथ गयीं। पति तो एक बार फिर से इंटरव्यू में नाकाम रहे लेकिन निरूपा रॉय के सामने बिना इंटरव्यू के ही फिल्म की नायिका की भूमिका का प्रस्ताव रख दिया गया। पति के जोर देने पर उन्हें उस प्रस्ताव के लिए हामी भरनी पड़ी, हालांकि बाद में उन्हें नायिका की जगह एक छोटी भूमिका दी गयी। उन्हें 'कोकिला बलसारा' की जगह फिल्मी नाम 'निरूपा रॉय' भी 'सनराईज पिक्चर्स' के मालिक वी.एम. व्यास ने ही दिया था। आगे चलकर उनके पति ने भी 'बलसारा' की जगह 'रॉय' उपनाम अपना लिया। फिल्म 'राणक देवी' साल 1946 में प्रदर्शित हुई थी। उस जमाने में अच्छे परिवार के लोगों और खासतौर से लड़कियों-महिलाओं का फिल्मों में काम

करना अच्छा नहीं माना जाता था। निरूपा रॉय के फिल्म में काम करने की खबर मिलते ही परिवार और समाज में हंगामा खड़ा हो गया। उनके पिता ने धमकी दे डाली कि अगर उनकी बेटी ने फिल्म में काम किया तो मायके से उसके रिश्ते हमेशा के लिए टूट जाएंगे। निरूपा रॉय का कहना था, 'समाज का विरोध तो फिल्म 'राणक देवी' के प्रदर्शित होते ही ठंडा पड़ गया, लेकिन पिताजी अपनी बात पर अड़े रहे। उन्होंने वाकई आखिरी सांस तक मेरा मुंह नहीं देखा। यहां तक कि उनके जिंदा रहते मां से भी मैं छुप-छुपकर ही मिलती थी।'

निरूपा रॉय की साईन की हुई पहली हिंदी फिल्म 'अजीत पिक्चर्स' के बैनर में साल 1948 में बनी 'गुण सुंदरी' थी। हिंदी और गुजराती में बनी इस द्विभाषी फिल्म के निर्माता-निर्देशक रतिभाई पुणातर थे। तीन संगीतकारों, बुलो सी.रानी, हंसराज बहल और अविनाश व्यास के संगीत से सजी इस फिल्म में निरूपा रॉय के नायक मनहर देसाई थे। लेकिन उनकी पहली प्रदर्शित हिंदी फिल्म सरदार चंदूलाल शाह की कंपनी 'रणजीत मूवीटोन' की 'लाखों में एक' (1947) थी जो उन्होंने 'गुण सुंदरी' के बाद साईन की थी। तैमूर बैरमशाह द्वारा निर्देशित और हंसराज बहल और बुलो सी.रानी द्वारा संगीतबद्ध इस फिल्म में निरूपा रॉय के नायक पाकिस्तानी कलाकार 'कमल' थे। सरदार चंदूलाल रतिभाई पुणातर के मामा थे।

निरूपा रॉय का कहना था, 'उस जमाने में धार्मिक, ऐतिहासिक और सामाजिक फिल्मों के अपने-अपने कलाकार हुआ करते थे लेकिन मैं सभी तरह की फिल्मों में समान रूप से व्यस्त हो गयी थी। हर हर महादेव (1950), शिवशक्ति (1952), नागपंचमी (1953), शिवकन्या (1954), सती मदालसा (1955), सती नागकन्या (1956) और चण्डीपूजा (1957) जैसी करीब 50 धार्मिक फिल्मों में मैंने

निरूपा रॉय के मुताबिक, 'मैंने मां (1976), अमर अकबर एंथोनी (1977), मुकद्दर का सिकंदर (1978), सुहाग (1979), गौतम गोविंदा (1979), कर्तव्य (1979), गंगा मेरी मां (1982), गंगा जमुना सरस्वती (1988), गंगा तेरे देश में (1988) जैसी कई फिल्मों में उस दौर के सभी बड़े नायकों की मां की भूमिका की, हालांकि मुझे खासतौर पर अमिताभ बच्चन की फिल्मी मां के तौर पर पहचाना जाता रहा।

साल 1956 में प्रदर्शित हुई फिल्म 'भाई-भाई' में वो पहली बार चरित्र भूमिका में नजर आयीं। इस फिल्म में उन्होंने अशोक कुमार की पत्नी की भूमिका निभाई थी और अशोक कुमार और किशोर कुमार ने भी इसी फिल्म में पहली बार एक साथ अभिनय किया था।

महीपाल, मनहर देसाई, साहू मोदक और त्रिलोक कपूर जैसे नायकों के साथ काम किया और सीता, सावित्री, दमयंती जैसे सभी पौराणिक चरित्र निभाए। अमरसिंह राठौर (1957), सम्राट चन्द्रगुप्त (1958), कवि कालिदास ((1959), रानी रूपमति (1959), वीर दुर्गादास (1960) और रजिया सुल्तान (1961) जैसी करीब 10 ऐतिहासिक फिल्में बतौर नायिका मैंने जयराज और भारतभूषण के साथ कीं।'

निरूपा रॉय को हमारी मंजिल (1949), मन का मीत (1950), भाग्यवान (1953), धर्मपत्नी (1953), दो बीघा जमीन (1953), गरम कोट (1955), कंगन (1959), हीरा मोती (1959), बेदर्द जमाना क्या जाने (1959) और घर की लाज (1960) जैसी सामाजिक फिल्मों में भी काफी पसंद किया गया। बतौर नायिका उनकी ज्यादातर फिल्में 1950 के दशक में बनीं। साल 1956 में प्रदर्शित हुई फिल्म 'भाई-भाई' में वो पहली बार चरित्र भूमिका में नजर आयीं। इस फिल्म में उन्होंने अशोक कुमार की पत्नी की भूमिका निभाई थी और अशोक कुमार और किशोर कुमार ने भी इसी फिल्म में पहली बार एक साथ अभिनय किया था।

निरूपा रॉय के मुताबिक, 'साल 1955 में बनी फिल्म मुनीमजी में नायिका की जवानी से लेकर बुढ़ापे तक की भूमिका को मैंने एक चुनौती मानकर

स्वीकार किया था। मैं उस फिल्म की पूरी शूटिंग भी कर चुकी थी लेकिन मुझे पता ही नहीं चला कि कब जवानी के मेरे सभी सीन काटकर मेरी जगह नलिनी जयवंत को ले लिया गया। इस धोखाधड़ी से मुझे ऐसा धक्का पहुंचा कि उस फिल्म के लिए मिला 'सर्वश्रेष्ठ सह-अभिनेत्री' का 'फिल्म फेयर पुरस्कार' भी मेरे दुख को कम नहीं कर पाया था। उधर मैंने एकाध बार सिंदबाद द सेलर (1952) और बाजीगर (1959) जैसी स्टंट फिल्मों के जरिए धार्मिक और ऐतिहासिक फिल्मों की अपनी इमेज को बदलने की कोशिश भी की लेकिन 'देवी' का मारधाड़ करना दर्शकों को जरा भी पसंद नहीं आया। विरोध स्वरूप मुझे इतने पत्र मिले कि भविष्य में स्टंट फिल्में करने की मेरी हिम्मत ही नहीं हुई।'

1960 का दशक शुरू होते-होते निरूपा रॉय पूरी तरह से चरित्र अभिनेत्री बन चुकी थीं। फिल्म छाया (1961) और शहनाई (1964) के लिए भी उन्होंने 'सर्वश्रेष्ठ सह-अभिनेत्री' के 'फिल्मफेयर पुरस्कार' हासिल किए। चांद और सूरज (1965), आया सावन झूम के (1969), आन मिलो सजना (1970) और छोटी बहू (1971) जैसी कई फिल्मों में उन्होंने मां की भूमिका की। लेकिन साल 1975 में बनी हिट फिल्म दीवार में अमिताभ बच्चन और शशि कपूर की मां की भूमिका ने उन्हें पूरी तरह से 'फिल्मी मां' के तौर पर स्थापित कर दिया।

निरूपा रॉय के मुताबिक, 'मैंने मां (1976), अमर अकबर एंथोनी (1977), मुकद्दर का सिकंदर (1978), सुहाग (1979), गौतम गोविंदा (1979), कर्तव्य (1979), गंगा मेरी मां (1982), गंगा जमुना सरस्वती (1988), गंगा तेरे देश में (1988) जैसी कई फिल्मों में उस दौर के सभी बड़े नायकों की मां की भूमिका की, हालांकि मुझे खासतौर पर अमिताभ बच्चन की फिल्मी मां के तौर पर पहचाना जाता रहा। 1980 के दशक के मध्य तक मैं अभिनय में काफी व्यस्त रही। फिर धीरे-धीरे काम कम होता चला गया। साल 1999 में बनीं लाल बादशाह, लव यू हमेशा और जहां तुम ले चलो मेरी आखिरी प्रदर्शित फिल्में हैं। जहां तुम ले चलो में मैंने जिम्मी शेरगिल की दादी की भूमिका की थी।'

साल 2004 में निरूपा रॉय को 'फिल्मफेयर-लाईफटाईम अचीवमेंट अवार्ड' से सम्मानित किया गया था। करीब 55 साल के अपने करियर के दौरान उन्होंने करीब 300 हिंदी फिल्मों के अलावा 16 गुजराती फिल्मों में भी अभिनय किया। उनके परिवार में पति कमल रॉय, दो बेटे योगेश और किरण और एक पोता, एक पोती शामिल हैं। इसके अलावा उन्होंने अपनी ननद की बेटी रेखा को बचपन से अपनी बेटी की तरह पाला और उसकी शादी की। रेखा परमार अपने पति के साथ लंदन में रहती हैं।

निरूपा रॉय का निधन दिनांक 13, अक्टूबर 2004 को 73 साल की उम्र में दिल का दौरा पड़ने से हुआ।

शिशिर कृष्ण शर्मा
फिल्म इतिहासकार

फ्रेशर्स पार्टी का आयोजन

कानोड़िया पी जी महिला महाविद्यालय में फ्रेशर्स पार्टी का आयोजन किया गया। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. सीमा अग्रवाल ने छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि नियमित अध्ययन के साथ साथ महाविद्यालय की अन्य गतिविधियों में भी सक्रियता से भाग लें एवं उन्हें लक्ष्य प्राप्ति की शुभकामनाएँ दी। कार्यक्रम में 95 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाली प्रथम वर्ष की मेघावी छात्राओं को कॉलेज द्वारा छात्रवृति प्रदान की गई।

महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्राएँ जिन्होंने हाल ही में आयोजित मिस राजस्थान प्रतियोगिता में विभिन्न अवॉर्ड जीते हैं जिनमें काजल दीक्षित (मिस राजस्थान बॉडी ब्यूटीफुल 2018), पूर्व मिस राजस्थान सिमरन शर्मा (ग्लोबल सुपर मॉडल इंण्डिया, 2018) एवं अर्शिना सुम्बुल (मिस राजस्थान एलिट 2018) को कार्यक्रम में सम्मानित किया गया। 50 छात्राओं द्वारा मिस फ्रेशर्स टाइटल के लिए

कैटवॉक की गई। इस आयोजन में निर्णायक आस्था अग्रवाल (एंटरप्रेन्योर), प्रीति मीणा (महाविद्यालय की पूर्व छात्रा एवं मिसेज राजस्थान 2018) एवं निमिषा मिश्रा (आयोजक मिस राजस्थान एवं मिसेज राजस्थान) रही। रंगारंग नृत्य प्रस्तुतियों के साथ मिस फ्रेशर पूजा शर्मा, रनर अप वर्तिका शर्मा एवं द्वितीय रनर अप ज्योति राजावत रही।

हिन्दी ने बढ़ाया मान

क्षितिज ..व्येर ड्रीम्स मीट रिएलिटी एक साहित्यिक संस्था है जो रंजीता अशेष के द्वारा युवा कवियों के लिए बनाई गई है । इससे आप फेसबुक पर जुड़ सकते हैं।

www.facebook.com/groups/sanmati2017

अपना निजी अनुभव साझा करने की जब बात होती है तो मेरे लिए बड़ा ही आसान हो जाता है। और बात जब हिंदी के प्रयोग की हो तो बड़े मजेदार वाकये हुए हैं मेरे साथ। क्योंकि मेरे अडोस-पड़ोस में मुझे HMT बुलाया जाता था। मतलब 'हिंदी मीडियम टाइप्स'।

वो भी इसलिए कि मैं अपने शहर के एकदम असभ्य हिस्से से निकलकर एकदम सभ्य बोले तो 'सॉफस्टिकटेड' हिस्से में रहने आई थी लगभग तब जब मैं 12 साल की थी। बोलचाल में हमेशा हिंदी ही प्रयोग में लाती थी। हम साधारण से स्कूल में पढ़ने वाले और बाकी सारे बच्चे कान्वेंट या cbse वाले। तो मजाक उड़ाने का पात्र हमेशा मुझे ही बनाया जाता था। इसकी वजह से मेरा कोई मित्र नहीं बनता था। एक साल गणपति के दिनों में अपार्टमेंट में गणपति जी विराजे। रोज तरह तरह की प्रतियोगिताएं होती थी बच्चों के लिए। मन बड़ा करता पर मजाक बनने के डर से मैं भाग नहीं ले पाती थी। एक रोज प्रश्न-उत्तर प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि हमारी ही कॉलोनी के वार्ड मेंबर को बनाया गया और पुरस्कार भी काफी बड़ा रखा गया।

सवालों का दौर शुरू हुआ प्रतियोगी बड़े ही होशियार बच्चे थे हमारी कॉलोनी के। सारे जवाब चुटकियों में दे रहे थे। फिर आया राउंड वैदिक मंत्रों के उच्चारण का। मतलब प्रतिभागियों को मंत्र ध्यान से सुनकर दोहराने थे। आम तौर पर सुनाई दे जाने वाले मंत्र तो बड़ी अच्छी तरह दोहरा गए पर जैसे ही थोड़ा स्तर बढ़ा सब गड़बड़ करने लगे।

मैं खड़ी देख रही थी और सच पूछो तो मन ही मन हँस रही थी। आखिर हूँ तो मैं भी इंसान मेरा मजाक बनाने वालों का मजाक जो बन रहा था। पर मेरे पापा ने मुझे टोका और कहा ही अतिथि के सामने इज्जत का सवाल समझो और अगर तुम्हें आता है तो दोहरा दो। मैंने भी झटपट खड़े होकर मंत्र दोहरा दिया वो भी एकदम सही उच्चारण के साथ और साथ-साथ अर्थ भी बताती गई।

सारे दर्शक यानी अपार्टमेंट वाले तो हैरान ही हो गए। मेरी हिंदी पे पकड़ परखने हेतु अब प्रतियोगिता के अलावा मुझसे अन्य सवाल भी पूछे गए। पढ़ने के शौक की वजह से लगभग सारे उत्तर सही से देती गई। फिर अतिथि ने पूछे मुझसे शाब्दिक अर्थ जिसमें से एक शब्द था 'जीर्णोद्धार'। इस शब्द का मतलब तब मुझे पता नही था। परंतु बात अब सम्मान पर आ गई थी...फिर याद आई संधि विच्छेद की तकनीक जीर्ण यानी पुराना, उद्धार याने उबरना...। बस मेरा ये चलाया तीर निशाने पर लग गया। और अतिथि द्वारा बाँधे गए तारीफों के बड़े बड़े पुल...और पुरस्कार मिला सो अलग।

फिर तो मुझे कोई HMT बुलाता तो गर्व होता कि हाँ मैं हूँ 'हिंदी मीडियम टाइप्स'। और कॉलोनी में दोस्तों की तो उस दिन के बाद से कोई कमी नहीं रही और बाकी बच्चों का हिंदी सीखने की तरफ रुझान बढ़ता हुआ देख घरवाले भी मुझ पर गर्व करते थे।

भावना कल्याणी
नागपुर

लौह पुरुष स्टैचू ऑफ यूनिटी

असाधारण व्यक्तित्व असाधारण तथ्य

❖ सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर, 1875 को गुजरात में हुआ था। वल्लभभाई पटेल का विवाह 16 वर्ष की आयु में ही कर दिया गया था। 22 वर्ष की असामान्य आयु में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की। इसी कारण परिवार द्वारा उन्हें यह कहा जाता था कि वह महत्वाकांक्षी नहीं है और जीवन में कुछ बड़ा नहीं कर पाएंगे।

❖ अधिक आयु में मैट्रिक की परीक्षा पास करने के बावजूद उन्होंने लंदन में जाकर बैरिस्टर की पढ़ाई की और बाद में वकालत का कार्य भी किया। बैरिस्टर की पढ़ाई भी उन्होंने अपने दोस्तों और रिश्तेदारों से किताबें मांग कर की थी। यह दृढ़ इच्छा-शक्ति और लगन ही उनके व्यक्तित्व को असाधारण बनाती है।

❖ सरदार पटेल की धर्मपत्नी का अस्पताल में एक ऑपरेशन के दौरान देहांत हो गया। जब सरदार पटेल को यह समाचार पत्र के रूप में दिया गया तब वे अदालत में जिरह कर रहे थे। पत्र पढ़ने के बाद उन्होंने पत्र धीरे से तह करके अपने जेब में डाल दिया और अपना काम जारी रखा। अदालत की कार्यवाही समाप्त होने के बाद ही उन्होंने अन्य लोगों को यह खबर बताई। सरदार पटेल कर्तव्य परायणता की एक मिसाल थे। ऐसी कर्तव्य परायणता आज की राजनीति में दुर्लभ है।

❖ ऐसी ही एक और घटना है जब गुजरात और भारत प्लेग की महामारी से जूझ रहा था उसी समय सरदार वल्लभभाई पटेल के एक मित्र भी उस खतरनाक बीमारी से संक्रमित हो गए थे। उस समय सरदार वल्लभ भाई पटेल ने अपनी परवाह ना करते हुए अपने उस मित्र की देखभाल की और इसी कारण वे स्वयं भी संक्रमित हो गए परंतु उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति और अपने मित्र के प्रति प्रेम ही था जो उन्होंने संक्रमण को हराकर इस बीमारी पर विजय प्राप्त की। इस प्रकार की संवेदना और सेवा भाव अगर आज की राजनीति में मिल जाए तो भारत का राजनीतिक नक्शा कुछ और ही होगा।

❖ सरदार पटेल पहले व्यक्ति थे जिन्होंने भारतीय नागरिक सेवाओं (आईसीएस) का भारतीयकरण कर इन्हें भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस)बनाया।

❖ अंग्रेजों के विरुद्ध फसलें खराब होने पर लगान पूरा वसूलने के विरोध में बार डोली आंदोलन के नेतृत्व और सफलता के कारण ही वल्लभ भाई पटेल जी को सरदार की उपाधि प्राप्त हुई थी।

❖ स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के सामने प्रश्न था कि छोटी-बड़ी 562 रियासतों का भारतीय संघ में

कैसे समाहित किया जाए तब इन महापुरुष ने इस गंभीर समस्या को बड़ी ही सादगी, बुद्धिमत्ता और शालीनता से सुलझाया।

❖ वल्लभ भाई कहते थे कि 'मैंने कला और विज्ञान के विशाल गगन में ऊंची उड़ाने नहीं भरी। मेरा विकास कच्ची झोपड़ियों में, गरीब किसान के खेतों की भूमि और शहरों के मकानों में हुआ है।' उनकी धरती से जुड़ी यही सोच उन्हें विलक्षण बनाती थी।

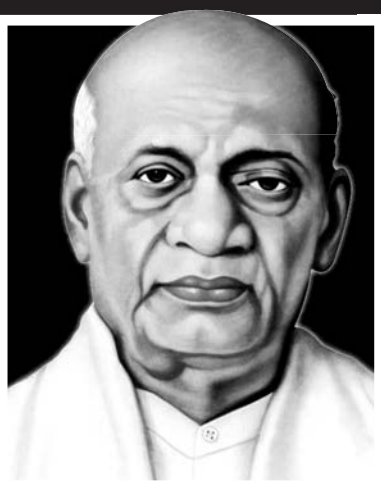

चीन से करीब 100 कारीगर आकर इस मूर्ति को पूरा करेंगे। प्रतिमा को पूरा करने के लिए 2400 कामगार दिन रात काम कर रहे हैं। परियोजना का कुल खर्च 2,989 करोड़ रुपए है ।

❖ वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के बहुत करीबी थे। गांधी जी की मृत्यु के बाद अचानक उनका स्वास्थ्य भी धीरे-धीरे खराब रहने लगा और उनकी मृत्यु के 2 महीने बाद ही उन्हें दिल का दौरा पड़ा बाद में 15 दिसंबर 1950 में उनका निधन हो गया।

❖ अपने दृढ़ निश्चय, बुद्धिमत्ता, शालीनता और संवेदनशीलता जैसे असाधारण गुणों और देश के एकीकरण में उनके अविस्मरणीय सहयोग के कारण उनकी जन्म तिथि 31 अक्टूबर को राष्ट्रीय एकता दिवस के रुप में मनाई जाती है।

❖ 31 अक्टूबर, 2013 को केवड़िया में स्टेच्यू ऑफ यूनिटी की आधार शिला गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा की गई थी।

❖ उनको श्रद्धांजलि देने हेतु एवं उनके कार्यों को दृढ़ता प्रदान करने के लिए भारत सरकार ने स्टैच्यू ऑफ यूनिटी नामक सरदार पटेल की विशालकाय मूर्ति बनवाने का प्रस्ताव किया है। इस योजना पर कार्य भी शुरू हो चुका है।

❖ इस मूर्ति का निर्माण सरदार सरोवर बांध से 3.5 किलोमीटर दूर स्थित साधुबेट टापू पर किया जा रहा है। कहते हैं चीन स्थित स्प्रिंग टेम्पल ऑफ बुद्धा की मूर्ति दुनिया की सबसे ऊंची मूर्ति 153 मीटर की ऊंचाई की है, पर सरदार पटेल की स्टैच्यू ऑफ यूनिटी की ऊंचाई इससे भी 29 मीटर ज्यादा रखने का प्रावधान है।

❖ इस प्रतिमा की प्रस्तावित ऊंचाई 182 मीटर गुजरात विधानसभा की कुल सीटों 182 के बराबर रखी गई है। पूरा होने के बाद स्टैच्यू ऑफ यूनिटी दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा होगी।

❖ इस साल सितंबर तक चीन के नानचांग की जियांग शीतोंग किंग केटी क्यू आर्ट फाउंड्री के कारीगर के गुजरात केवडिया में आकर प्रतिमा का तांबे का बाहरी ढांचा बनाने में मदद करेंगे।

❖ वल्लभभाई की मूर्ति का मूल ढांचा कंक्रीट और स्टील से बनाया जा रहा है। ढांचे के ऊपर कांसे की कोटिंग की जाएगी। मूर्ति का बाहरी ढांचा लगाने के लिए टी क्यू आर्ट फाउंड्री के कारीगर मूर्तिकार राम सुतार जी के नेतृत्व में तांबे के 5000 पैनल डिजाइन किए गए हैं। इन सभी पैनलों को वर्कशॉप में ले जाकर जोड़ा जाएगा और चरणबद्ध तरीके से मूर्ति का बाहरी ढांचा तैयार किया जाएगा।

❖ मूर्ति बनाने के लिए इस्तेमाल होने वाला स्टील त्रिची में बन रहा है जहां से इसे गुजरात लाया जाएगा।

❖ जब इस मूर्ति की आधारशिला रखी गई थी तब यह प्रावधान था कि प्रत्येक भारतीय गांव के किसानों से एक 1 किलो लोहा लेकर पिघलाकर इस मूर्ति में लगाया जाएगा और जिन गांव के लोहे के टुकड़े लगाने लायक नहीं होंगे उन्हें मूर्ति के चारों और बनाए जाने वाले परिसर में लगा दिया जाएगा। ताकि यह मूर्ति किसानों के खून पसीने की याद दिलाए और देशभर के किसानों के एक होने का प्रतीक बने।

❖ इस मूर्ति के साथ-साथ सरदार सरोवर निगम परियोजना के अंतर्गत क्षेत्र में करीब 400 फुट ऊंचा डैक बनाया जाएगा, जहां पर करीब 200 लोग एक साथ खड़े होकर मनोरम दृश्य का लुत्फ उठा सकेंगे ।

❖ दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमाओं में अगर अब आप 'स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी' का नाम सोचेंगे तो आपको यह बता दें कि 'स्टेच्यू ऑफ यूनिटी' यानी सरदार पटेल की प्रतिमा स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी से 5 गुनी ऊंची होगी।

प्रस्तुतिः नित्या शुक्ला

होम्योपैथी द्वारा मौसमी बीमारियों का निदान

बारिश का मौसम अधिकांश लोगों का पसंदीदा होता है, यह गर्मियों से राहत जो दिलाता है। लेकिन बारिश जहां एक ओर हरियाली और ठंडक लेकर आती है वहीं दूसरी तरफ यह मौसम कई बीमारियां भी साथ लाता है। हर तरफ पानी का जमाव, दूषित पेयजल और कीट पतंगों की भरमार के चलते कई तरह की बीमारियों को खुला निमंत्रण मिल जाता है। बारिश बीमारियों का मौसम है। मॉनसून में कई तरह के संक्रामक रोग तेजी से फैलते हैं। दरअसल बरसात होने के बाद वातावरण में नमी हो जाती है और नमी में बैक्टीरिया और वायरस तेजी से फैलते हैं। इस मौसम में त्वचा की बीमारियों के अलावा वायरल बुखार, डेंगू, डायरिया और मलेरिया, अमीबीयासिस का खतरा बढ़ जाता है।

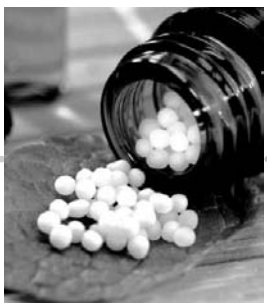

आम सर्दी, खांसी और वायरल

बुखार मानसून में एक सबसे प्रमुख रोग में से एक है आम सर्दी अर्थात् कॉमन कोल्ड। यह नम और उमस भरे मौसम में पनपने वाले वायरस की वजह से होता है। लंबी अवधि के लिए गीले कपड़े पहने रहना एयर कंडीशनर से देर तक नम हवा में रहना ठंड लगने की आशंका को बढ़ा देता है। इससे बचने के लिए अपने साथ बाहर जाते समय कपड़ों की एक अतिरिक्त जोड़ी रखें, एसी के बजाए ताजी हवा में रहें तथा ताजे फल और सब्जियां खाकर अपनी प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करें।

डायरिया

बरसात के मौसम में डायरिया भी काफी होता है। इसमें बार-बार दस्त और उल्टियां होने से शरीर में पानी और सोडियम क्लोराइड (नमक) की मात्रा कम हो जाती है और शरीर में सोडियम का स्तर घटने के कारण इससे डायरिया हो जाता है। डायरिया होने पर पानी व तरल पदार्थों को प्राथमिकता दें। ताजा छाछ, नींबू पानी, नारियल पानी, एलोवेरा का रस, खीरे का रस, ग्रीन टी आदि लें। दिन में तीन बड़े भोजन की जगह 5 से 6 छोटे व हल्के भोजन करें और तत्काल डॉक्टर को दिखाएं।

मलेरिया

मलेरिया मच्छरों एनाफिलीज जाति के मादा मच्छरों के काटने से होता है। इसके लक्षणों मे अचानक ठंड के साथ तेज बुखार या फिर गर्मी के साथ तेज बुखार होना, पसीने के साथ बुखार कम होना और कमजोरी महसूस होना, एक या दो दिन बाद बुखार फिर आना आदि शामिल होते हैं। इससे बचने के लिए ब्लड टेस्ट कराएं और डॉक्टर द्वारा बतायी दवा की पूरी डोज लें, नहीं तो मलेरिया का बुखार दुबारा होने की आशंका रहती है।

जॉन्डिस

बारिश में जॉन्डिस होने का खतरा भी रहता है। जॉन्डिस के लक्षणों में हल्का बुखार, सिर दर्द, थकावट, मन खराब रहना और भूख कम लगना पीला पेशाब, उल्टियां, बेहद कमजोरी महसूस करना तथा त्वचा और आंखों का पीला होना शामिल हैं। इससे बचाव और इलाज के लिए साफ पानी पियें या फिर पानी उबाल कर पियें। खाना खाने से पहले और शौच जाने के बाद हाथ जरूर धोएं। पानी न उबाल पाने की स्थिति में 20 लीटर पानी में 500 मिलीग्राम क्लोरिन की गोली मिलाएं। गोली मिलाने के तीस मिनट तक पानी को ढंका रहने दें। अधिक परेशानी होने पर तत्काल डॉक्टर से संपर्क करें।

फ्लू इन्फ्लूएंजा

बरसात के मौसम में हमारे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता कमजोर हो जाती है। वातावरण में आयी नमी के कारण कई तरह के वायरस और बैक्टीरिया आसानी से पनपते हैं और फ्लू इन्फ्लूएंजा हो जाता है। ऐसे में बुखार यदि 102 डिग्री तक है और कोई और खतरनाक लक्षण नहीं हैं तो मरीज की देखभाल घर पर ही कर सकते हैं, लेकिन अगर बुखार 3 दिन से अधिक समय तक है तो तुरंत डॉक्टर के पास जाएं। तरल पदार्थ जैसे सूप, जूस, गुनगुना पानी आदि का अधिक सेवन करें।

लेप्टोस्पाइरोसिस

लेप्टोस्पाइरोसिस सबसे आम मानसून बीमारियों में से एक है जो ज्यादातर गंदे पानी में चलने के कारण होती है। खासतौर पर इसके होने की अधिक संभावना तब होती है जबकि आपकी त्वचा पर कोई खरोंच या चोटों आदि लगा हो। यह जीवाणु रोग चूहों से फैलता है। इसके लक्षणों में गंभीर सिर दर्द के साथ तेज बुखार और ठंड लगना तथा मतली, उल्टी, दस्त और पेट दर्द आदि शामिल होते हैं। इससे बचने के लिए जितना संभव हो, गंदे पानी में घुसने से बचें। ऐसे होने पर घर आकर तुरंत नहाएं। कोई चोट लगी हो तो उन्हें अच्छी तरह से कवर करके रखें।

अमीबियासिस

अमीबियासिस मुख्य रूप से पानी से फैलने वाला रोग है। इस मौसम में बाहर के खुले पानी में कई तरह के हानिकारक बैक्टीरिया और वायरस मौजूद होते हैं। ऐसे में बाजार में खुले में बिकने वाले खानों (विशेष रूप से होटल, ठेले आदि के खानों) को अशुद्ध पानी से बनाया जाता है। इसके अलावा बारिश के मौसम में खुले में रखा हुआ खाना जल्दी संक्रमित होकर खराब हो जाता है जबकि बाजार में बिकने वाले खाद्य पदार्थ

डेंगू

डेंगू बरसात के मौसम और उसके फौरन बाद के महीनों यानी जुलाई से अक्टूबर तक सबसे ज्यादा फैलता है। डेंगू के लक्षणों में ठंड से साथ तेज बुखार आना, सिर, मांसपेशियों और जोड़ों का दर्द, बहुत ज्यादा कमजोरी महसूस करना, भूख न लगना और जी मितलाना, शरीर, खासकर चेहरे, गर्दन और छाती पर लाल-गुलाबी रंग के रैशेज तथा नाक और मसूढ़ों से खून आना शामिल होते हैं। इससे बचने के लिए एडीज मच्छरों को पैदा होने से रोकें। ध्यान रहे कि डेंगू के मच्छर साफ पानी में पनपते हैं। इन दिनों बुखार होने पर सिर्फ पैरासिटामोल (क्रोसिन, कैलपोल आदि) लें। एस्प्रिन (डिस्प्रिन, इकोस्प्रिन) या एनालजेसिक (ब्रूफिन, कॉम्बिफ्लेम आदि) बिल्कुल न लें। क्योंकि अगर डेंगू है तो एस्प्रिन या ब्रूफिन आदि लेने से प्लेटलेट्स कम हो सकती हैं और ब्लीडिंग शुरू हो सकती है।

आमतौर पर काफी देर पहले बने होते हैं। इसके अलावा खाना बनाने और परोसने वाले लोगों द्वार नाखून, सिर एवं शरीर के अन्य खुले भाग का ध्यान नहीं रखे जाने

डॉ. मुकेश सोलंकी
B.H.M.S.,M.D.(Hom),
होम्योपैथी फिजिशियन,
राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर

के कारण अमीबियासिस का जीवाणु एक से दूसरे तक पहुंचता है।पतले दस्त, भोजन के बाद पेट में दर्द, रुक-रुक कर दस्त शुरू हो जाना,कब्ज की समस्या हो, अपच हो जाए और उल्टी हो,पेट में गैस बनना यानि वायु-विकार होना; त्वचा संबंधी रोग होना जैसे रैशेज, दाद, खुजली आदि

आँखों में होने वाले संक्रामक रोग

होम्योपैथिक दवा बिना किसी साइड इफेक्ट के बीमारी को अति शीघ्र जड़ से ठीक कर देती हैं। होम्योपैथी चिकित्सा रोग के लक्षणों के आधार पर की जाती हैं।

बरसाती बीमारियों के बचाव व निदान के लिये उपयोग में आने वाली कुछ प्रमुख होम्योपैथी दवाइयाँ हैं- आर्सेनिक एल्बम, रस टोक्स, डल्कामारा, नेटरम सल्फ, मलेरिया ओफ्फिसनालिस, कम्फर, युपेटोरियम पर्फ, मर्क सोल आदि। लेकिन इनका सेवन करने से पहले अपने चिकित्सक की सलाह लेना बिल्कुल न भूलें। याद रहे दवा हमेशा किसी होम्योपैथिक फिजिशियन की देख-रेख में ही लेनी चाहिए।

प्रस्तुतिः लुभावना शर्मा

वीएमओयू कोटा में बनेगी शोधपीठ

अटलजी के विचारों और कार्यों पर शोध करें-राज्यपाल

माही संदेश। राजस्थान के राज्यपाल एवं कुलाधिपति कल्याण सिंह ने कहा है कि देश के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी के विचार और कार्य गहन शोध के विषय हैं। उन्होने कहा कि विश्वविद्यालयों को उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर शोध की पहल करनी चाहिए। कल्याण सिंह ने वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय में पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी पर अनुसंधान के लिए शोधपीठ की स्थापना करने की आवश्यकता प्रतिपादित की है।

राज्यपाल एवं कुलाधिपति कल्याण सिंह ने कोटा के वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय के ग्यारहवें दीक्षांत समारोह पर छात्र-छात्राओं व उनके अभिभावकगण और विश्वविद्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। कल्याण सिंह ने समारोह में भेजे शुभकामना संदेश में विश्वविद्यालय प्रशासन से अटलजी पर अनुसंधान कार्य कराये जाने की अपेक्षा की है।

दूरस्थ शिक्षा को नया रूप देना जरूरी

कुलाधिपति कल्याण सिंह ने कहा है कि ऑनलाइन शिक्षा का दौर शुरू हो गया है। बदलते परिदृश्य में दूरस्थ शिक्षा को नया रूप देना आवश्यक है।

विश्वविद्यालय सामाजिक भागीदारी को समझें

राज्यपाल कल्याण सिंह ने कहा है कि विश्वविद्यालय सामाजिक भागीदारी को समझें। ऐसे कार्यक्रमों का संचालन करें कि युवा पीढ़ी को गांव, गरीब और जरूरतमंद की पीड़ा का एहसास हो सके। सिंह ने कहा कि सामाजिक उत्तरदायित्वों का ज्ञान छात्र-छात्राओं को कराना जरूरी है ताकि युवा जिम्मेदारियों को समझें। राज्यपाल ने कहा कि ऐसे नवाचारों से समाज का उत्थान होगा और नये वातावरण का निर्माण हो सकेगा।

श्रद्धांजलि

हिन्दी साहित्य का एक और नक्षत्र अस्त हुआ। हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि, पत्रकार और हिंदी अकादमी के उपाध्यक्ष विष्णु खरे का निधन हो गया है। उन्हें पिछले सप्ताह ब्रेन स्ट्रोक की वजह से नई दिल्ली के जीबी पंत अस्पताल में भर्ती कराया गया था। उन्हें ब्रेन स्ट्रोक हुआ था, जिसके बाद अस्पताल में भर्ती करवाया गया था। खरे पहले मुंबई रह रहे थे, लेकिन दिल्ली हिंदी अकादमी का उपाध्यक्ष बनने के बाद वे दिल्ली में ही रह रहे थे। मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा में जन्मे विष्णु खरे कवि के साथ ही अनुवादक, फिल्म आलोचक, पटकथा लेखक और पत्रकार भी रहे हैं। वे मयूर विहार के हिंदुस्तान अपार्टमेंट में किराए के एक कमरे में अकेले रहते थे। उन्होंने इंदौर के क्रिश्चियन कॉलेज से अंग्रेजी साहित्य में एमए करने के बाद हिंदी पत्रकारिता से अपने करियर की शुरुआत की। वे कुछ समय तक 'दैनिक इन्दौर' में उप संपादक रहे और बाद में उन्होंने दिल्ली, लखनऊ और जयपुर में नवभारत टाइम्स के संपादक का काम संभाला।

सम्मान

वे हिंदी साहित्य की प्रतिनिधि कविताओं की सबसे अलग और प्रखर आवाज थे। उन्हें हिंदी साहित्य के नाइट ऑफ द व्हाइट रोज सम्मान, हिंदी अकादमी साहित्य सम्मान, शिखर सम्मान, रघुवीर सहाय सम्मान, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान से सम्मानित किया गया था।

रचनाएं

विष्णु खरे को हिंदी साहित्य में विश्व प्रसिद्ध रचनाओं के अनुवादक के रूप में भी याद किया जाता है। उन्होंने मशहूर ब्रिटिश कवि टीएस इलियट का अनुवाद किया और उस पुस्तक का नाम 'मरु प्रदेश और अन्य कविताएं' है। उनकी रचनाओं में काल और अवधि के दरमियान, खुद अपनी आंख से, पिछला बाकी, लालटेन जलाना, सब की आवाज के पर्दे में, आलोचना की पहली किताब आदि शामिल है।

साइबर बुलिंग

साइबर *बुलिंग का मतलब होता है। साइबर धमकी या इन्टरनेट के माध्यम से गलत फोटो, गलत मैसेज, फेक न्यूज या वीडियो प्रसारित करते हुए किसी व्यक्ति को डराना, धमकाना या उसे गलत दिशा में भटकाना इत्यादि साइबर बुलिंग के अन्तर्गत आता है।*

इस अपराध के शिकार प्राय: कम उम्र के बच्चे होते हैं ये अपराध करने वाले उन्हें अपना शिकार बनाते हैं, कम उम्र एवं अपरिपक्व सोच के कारण वे इनके चंगुल में आसानी से फंस जाते हैं। इस प्रकार के अपराध का शिकार होने से वे बच्चे डरे सहमे रहने लगते हैं और धीरे-धीरे वे अपना मानसिक सन्तुलन खोने लगते हैं या बड़े अपराधों की ओर अग्रसर होने लगते हैं अपने माता-पिता से भी बातें छुपाने लगते हैं।

प्रत्येक आधुनिक शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यालयों में कम्प्यूटर शिक्षा को बढ़ावा दिया जा रहा है। 12 से 18 वर्ष तक से किशोरवय बच्चे रोजाना सामान्यत: मोबाईल, टेबलेट व लेपटॉप पर करीब 5-7 घण्टे का समय व्यतीत करते हैं किशोरवय बच्चों का झुकाव सोशल मीडिया के व्हाट्सएप, फेसबुक, ट्विटर इत्यादि अपने अकाउण्ट बनाकर सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हैं इसमें अपनी पसंद-नापसंद, फोटो, व्यक्तिगत जानकारी इत्यादि को शेयर करते हैं। साईबर बुलिंग के अपराधी प्राय: ऐसे बच्चों की सूचनाओं पर अपनी निगाहें बनाये रखते हैं और उन्हें अपने ग्रुप में आने के लिए प्राथमिक स्तर पर अनेक प्रकार के प्रलोभन देकर शामिल करते हैं और अपना शिकार बनाते हैं इसका वर्तमान में सबसे संवेदनशील उदाहरण ब्लयू व्हेल, मैमो चैलेन्ज इत्यादि गेम चर्चा का विषय रहे हैं इस खेल में बच्चों को कुछ विशेष टास्क पूरे करने के लिए दिये जाते हैं। इनके पूरे किये जाने पर पॉइण्ट दिये जाते हैं इन पॉइण्ट्स को ग्रुप में बढ़ा-चढ़ाकर दिखाये जाते हैं। और ग्रुप में उन्हें ऊपर दिखाकर उनकी इज्जत बढ़ाई जाती है। इसके खेल मे 50 लेवल होते हैं। सबसे आखिरी लेवल मे बच्चे की जान ही चली जाती थी। पर्सनल फोटोग्राफ को हेक करके उनका दुरूपयोग करके उन बच्चों से पैसा लिया जाना या ड्रग्स की अंधेरी दुनिया में धकेला जाना या अपराध करवाना आम बात है।

साईबर बुलिंग से बचाव के उपाय

1. अपने किशोर व बच्चों से इस अपराध के बारे में बात करें, जानकारी दे तथा उनके सोशल मीडिया अकाउंट पर छोटी-मोटी टिप्पणी आती है तो उसे इग्नोर/ नजर अंदाज करना सिखाये।
2. यदि बुलिंग करने वाला व्यक्ति आपके फोन पर मैसेज इत्यादि भेज रहा है तो उसे ब्लॉक करें।
3. इस मैसेज का रिकॉर्ड रखें और वेबसाईट के एडम पर शिकायत अवश्य करे। नेशनल क्राईम प्रिन्वेशन काउन्सिल के निर्देशानुसार प्रत्येक सोशल मीडिया पर सुरक्षा के विकल्प सेंटर द्वारा प्रदान किये जाते है जिनका हमें पता ही नहीं होता है।
4. अपने बच्चों के व्यवहार का ध्यान रखे असामान्य व्यवहार होने पर उससे बात करें। यदि कोई समस्या है तो उसे सुलझाने में मदद करें।
5. यदि आपके बच्चे सोशल इंवेट या स्कूल इवेंट में भाग लेने से मना करे या अचानक उनके परीक्षा मे नम्बर कम आये।
6. यदि आपके बच्चे कम्प्यूटर पर कार्य करते हुए आपके आने पर अपना ब्राउजर बंद करें या पेज बदलें।
7. कम्प्यूटर या लेपटॉप को समय-समय पर चेक करें कि आपके बच्चे कौनसी साईट्स/वेबसाईट पर काम कर रहे हैं या देख रहे हैं।
8. सोशल साईट में अपने बच्चों के साथ उनके ग्रुप में रहे।
9. घर मे ब्रॉडबेंड या वाई-फाई हो तो पेरेन्टस लॉक करें।
10. नेट की पूरी जानकारी व सुरक्षा उपायों की जानकारी अपने बच्चों को अवश्य दें।

कानूनी प्रावधान

आईटी एक्ट (इन्फोर्मेशन एण्ड टेक्नॉलोजी एक्ट) एवं साईबर स्टॉकिंग एक्ट के अन्तर्गत इस प्रकार के अपराधों पर कानूनी कार्यवाही अमल मे लाई जाती हैं।

भारती ठाकुर
निरीक्षक पुलिस,
इन्टेलीजेन्स ट्रेनिंग अकादमी, जयपुर।

लम्बे समय तक जहन में रहती हैं कहानियां: दिनेश पंचाल

जयपुर: प्रभा खेतान फाउण्डेशन द्वारा ग्रासरूट मीडिया फाउण्डेशन के सहयोग से राजस्थानी साहित्य, कला व संस्कृति से रूबरू कराने के उद्देश्य से 'आखर' श्रृंखला में आज राजस्थानी भाषा के साहित्यकार दिनेश पंचाल से उनके कृतित्व व व्यक्तित्व पर चर्चा की गई। उनके साथ संवाद बांसवाड़ा के नाटककार सतीश आचार्य ने किया। श्री सीमेंट द्वारा समर्थित इस कार्यक्रम का आयोजन होटल आईटीसी राजपुताना में आयोजित हुआ।

अपने साहित्यिक सफरनामे पर बताते हुये वागड क्षेत्र के डूंगरपूर में जन्में दिनेश पंचाल ने बताया कि उनकी कहानियों के प्रेरणा स्त्रोत सुदूर दक्षिण राजस्थान की आदिवासी जनजातिया और उनका निश्छल जनजीवन रहा हैं। अंचल क्षेत्र से होने के कारण वह वागड़ भाषा में लेखन करते है। उन्होंने आगे बताया कि बचपन से ही साहित्य में रूचि रही है, पिताजी संस्कृत के अध्यापक थे तो वे लाईब्रेरी में काफी समय बिताया करते थे इस दौरान उन्होंने प्रेमचंद, निराला, जयशंकर प्रसाद, आचार्य चतुरसेन आदि की किताबें पढ़ी तब से ही साहित्य के प्रति रूचि बढ़ती चली गई। दिनेश पंचाल राजस्थानी भाषा के प्रमुख रचनाकार हैं। उनको सन् 2008 में कहानी संग्रह 'पगरवा' के लिए केन्द्रीय साहित्य अकादमी, दिल्ली से सम्मान प्राप्त है। इनके अलावा उन्हें 2018 में जोधपुर के कथा संस्थान द्वारा कहानी संग्रह 'बहुरूपिये लोग' के लिए रघुनंदन त्रिवेदी कथा सम्मान, 2012 में अंजना सहजवाला राष्ट्रीय कथा सम्मान, 2012 में सजनगाथा डॉटकॉम सम्मान, वागड़ मंच सम्मान, सलीला साहित्य रत्न सम्मान तथा साथ ही अन्य अनेक पुरस्कारों द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।

दहेज की बदलती तस्वीर

प्रिया एक समझदार लड़की है, जो बचपन से एक ऐसे माहौल में पली-बढ़ी है जहां पर उसने हमेशा अपने बड़े बुजुर्गों और माँ बाप का आदर सम्मान किया है और अपने माँ बाप की सारी बातें मानते हुए अपनी पढ़ाई की है। अपने पिता के सख्त स्वभाव के बाद भी उसने अपनी पढ़ाई निश्चित समय पर और सही तरीके से पूरी की है क्योंकि उसके पिता सख्त जरूर हैं किन्तु उन्होंने कभी भी प्रिया को पढ़ाई करने से नही रोका। पढ़ाई पूरी करने के बाद प्रिया को एक बहुत अच्छी मल्टीनेशनल कंपनी में एक मैनेजर के रूप में काम करने लगी है। आधुनिक विचारों की होने के बावजूद भी प्रिया हमेशा अपने मां-बाप का सम्मान करती है और कहीं ना कहीं उसने यह बात मन में ठानी हुई है कि वह अपने माता-पिता की पसंद से ही शादी करेगी।

धीरे-धीरे अब वो समय आ गया जिसमें प्रिया के विवाह के बारे में उसके मां बाप सोचने लगे और अपने सामर्थ्य के अनुसार उसके पिता ने एक बहुत ही अच्छी जगह पर अपनी बेटी प्रिया का रिश्ता तय किया और अपने पूरे सामर्थ्य से उसके विवाह किया और उसे अपने जीवन की जमा पूंजी दहेज में देकर ससुराल के लिए विदा किया। इकलौती बिटिया प्रिया के विवाह में उन्होंने कोई कमी नहीं की।

रिश्तों ने जब बदला रंग

धीरे-धीरे समय गुजरने लगा। प्रिया अपने पति वरुण के साथ बहुत खुश थी। उसके सास-ससुर का व्यवहार भी प्रिया के साथ हमेशा अपने मां-बाप की तरह ही था। अपनी खुशियों से भरे जीवन में प्रिया का एक वर्ष बड़ी ही खुशियों के साथ गुजर रहा था। अब वो समय भी आ गया था कि प्रिया और वरुण के जीवन एक बच्चे के रूप में उनके बेटे ने जन्म लिया। सब कुछ बड़ा ही खुशियों से भरा चल रहा था, समय पंख लगाकर खुशियों के साथ उड़ता जा रहा था, किसी कारणवश प्रिया बच्चा होने के बाद अपने जॉब को करते हुए अपने बेटे का पालन-पोषण ढंग से नहीं कर पा रही थी और खुद भी काफी थका और बीमार सा महसूस करने लगी थी। यहां से उसकी जीवन में एक नया बदलाव आया जिसके बारे में उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

प्रिया को अचानक ही अपने पति और सास ससुर के व्यवहार में कुछ परिवर्तन सा महसूस होने लगा। उसने देखा कि किसी ना किसी तरीके से उसका पति और उसके सास ससुर उसे दुबारा से जॉब पर जाने के लिए कहते थे। उसके बीमार हालत को भी नहीं समझा जाता था। धीरे-धीरे प्रिया को समझ आने लगा कि पढ़ी लिखी और जॉब करने वाली लड़की से ही शादी की चाहत रखने वालों का अब ये दहेज लेने का दूसरा तरीका बन गया है। शायद यही दहेज के आधुनिक रूप हैं कि अब लड़की बिना अपना ख्याल रखे बाहर भी कमाए और घर के भी सारे काम करे।

नीरज त्यागी
गाजियाबाद, उत्तरप्रदेश

सांची

एक तो पति का नाकारापन ऊपर से घर पर आये दिन ससुराल वालों के आ धमकने से उसकी आर्थिक स्थिति डांवा-डोल हो जाती थी, लेकिन हार मानना उसकी फितरत में नहीं था।

रेखा चटर्जी
जयपुर, राजस्थान

'क्या हुआ उदास क्यों है?' सांची के घर में घुसते ही मैंने उसके चेहरे की उदासी भांपते हुए पूछा। 'परी को ये स्कूटर में बिठाकर गांव ले गए, बुखार था फिर भी। बहुत याद आ रही है उसकी।' सांची बोली। सांची की छोटी बेटी का नाम था परी।

भले ही सांची हमारे घर में काम करने वाली बाई थी, लेकिन घर के सदस्य की तरह थी। नई-नई शादी होकर गांव से जयपुर आई थी, तभी से वह हमारे घर में काम करती थी। उमंगों और चाहत से भरपूर थी, उससे हुई पहली मुलाकात में ही मेरा मन मोह लिया था।

सांची को हमारे घर आते हुए छह साल बीत गए थे। इन छह साल में उसकी गृहस्थी आगे बढ़ चुकी थी। वह दो सुन्दर-सुन्दरी बेटियों की मां थी अब।

हालांकि पहली बेटी के जन्म के बाद ही सांची को यह एहसास हो चला था कि उसकी जिंदगी आसान नहीं है। उसका पति किशन काम सिर्फ नाम का करता है। आए दिन उसे अकेला छोड़ गांव चला जाता। हालात से समझौता करना सीख गई थी वर्ना चारा भी नहीं था कुछ।

एक दिन काम करते-करते अचानक उसने कहा 'आंटी अब तो मेरे भी दो बेटियां हैं आपकी तरह।' 'तो क्या अब तुम तीसरा नहीं करोगी?' मैंने उसे छेड़ा।

'नहीं आंटी! अब और नहीं। इन दोनों को खूब पढ़ाऊंगी, कुछ बनाऊंगी।' उसके बोलने के लहजे में जोश के साथ एक दृढ़निश्चय साफ झलक रहा था।

पता नहीं क्यों उसकी बातें सुनकर मुझे उस समय अच्छा लगा। उसके चेहरे पर आए भाव और संतोष को मैं समझने की कोशिश कर रही थी।

सांची पर जिम्मेदारियों के चलते अधिक कमाने की धुन सवार हो गई थी। अलमस्त सांची के चेहरे की कांति भले क्षीण पड़ने लगी थी। लेकिन खिलखिलाहट यथावत थी। अपनी बड़ी होती बेटियों के भविष्य लेकर उसे चिंता सताने लगी। बेटियों को अंग्रेजी स्कूल में पढ़ाना है और इसके लिए उसे ढेर सारे पैसे चाहिए थे। मगर उसके हालात उसकी इस इच्छा के आगे दीवार बने हुए थे।

एक तो पति का नाकारापन ऊपर से घर पर आये दिन ससुराल वालों के आ धमकने से उसकी आर्थिक स्थिति डांवा-डोल हो जाती थी, लेकिन हार मानना उसकी फितरत में नहीं था। दो चार घरों में काम करके जो कुछ कमाती उसमें से एक हिस्सा उसने बेटियों की पढ़ाई के लिए बचाना शुरू कर दिया था। मेरे से अपने मन की बात करके शायद उसे सुकून और हौसला मिलता था। 'आंटी, मैं सौम्या को अंग्रेजी स्कूल में पढ़ाना चाहती हूं। मैं नहीं चाहती उसकी जिंदगी भी मेरी जैसी हो। मैं तो नहीं पढ़ पाई मगर इन दोनों को जरूर पढ़ाऊंगी।'

उसकी बातें सुनकर लगा कि शायद मां ही वो इन्सान है जो अपने बच्चे को हर दुख को अपने में आत्मसात करके उसे सदा सुख से सराबोर करने को लालायित रहती है। इतना तो मैं भी कभी अपनी बेटियों ऋतु और रीना के लिए सोच नहीं पाई थी।

एक दिन सांची ऋतु से पूछ रही थी कि 'अगर मैं अपना खाता आपके बैंक मे खुलाऊंगी तो मेरे आदमी को पैसे के बारे में पता तो नहीं चलेगा ना।'

अपनी बेटियों की लिखाई-पढ़ाई पर इतना ध्यान कभी नहीं दिया मैंने। यह डिपार्टमेंट राजेश को सौंपकर मैं बेफिक्र हो गयी थी। आज सांची को देखकर और उसकी बातों को सुनकर अच्छा लगा। एक छोटे से गांव से आई लड़की जिसने कभी स्कूल का मुंह ही ना देखा हो अपनी बेटियों का भविष्य उज्जवल करने के लिए कितनी ऊंची सोच रखती है।

ऋतु से बात करने के अगले दिन सुबह करीब दस बजे सांची का फोन आया ''आंटी आज काम पर आने में थोड़ी देर हो जाएगी। कुछ जरूरी काम आ गया होगा शायद इसलिये देर से आने के लिए बोल रही है। यह सोचकर मैंने भी कह दिया 'ठीक है।'

शाम को सांची ऋतु के पास एक फॉर्म लेकर आई।'

'यह क्या लाई है' मैंने उत्सुकतावश पूछा।

'आंटी बैंक में खाता खुलवाने के लिए फॉर्म लाई हूं, दीदी से भरवाकर, उनके बैंक में ही अपना खाता खुलवा लूंगी।

उसका आत्मविश्वास और उसकी सोच देखकर मुझे एहसास हो चला था कि बदलाव की शुरूआत हो चुकी है। स्नेह भरी नजरों से सांची को देखते हुए मन में सिर्फ यही बात घूम रही थी कि सांची जितनी हिम्मत तो मैं साधन संपन्न होने के बाद भी कभी नहीं जुटा सकी। मेरी बेटियों का भविष्य संवारने में भी मेरा उतना योगदान कभी नहीं रहा जितना आज सांची अपनी बेटियों का भविष्य संवारने के लिए दे रही है। ऋतु फार्म भर रही थी और सांची अपने काम में मशगूल हो चुकी थी, जैसे इस फार्म के भरने के बाद उसके बेटियों के जीवन की सारी बाधाएं दूर हो जाएंगी।

पिता के नाम बेटे का खत

मुझे लगता है कि मेरे पिता की सबसे खास बात ये थी कि वे एक आम आदमी थे। ऐसे आम आदमी जो जिन्दगी भर 'खास' भी नहीं बनना चाहते थे। वो नहीं चाहते थे कि भीड़ में वो अकेले नजर आये वो तो चाहते थे कि वे सबके साथ नजर आयें सब उनके साथ नजर आयें। आम रहना चाहते थे /नेता नहीं दिखना चाहते थे ।

कोई उन्हें नोटिस करें -शायद ये तो बिल्कुल भी नहीं। आज मैं गर्व से कह सकता हूं कि मैं एक आम आदमी का बेटा हूं। मेरे पिता की यह पहचान उनको अलग बनाती रहेगी। वे एक ऐसे पेड़ थे, जो हमेशा धूप में खड़े रहकर मुझे, मेरे घर को, मेरे घरवालों को यही एहसास कराते रहे कि अरे सूरज होता ही नहीं है? छांव ही होती है। वे ऐसी ढाल थे ऐसी छांव थे जिसने सूरज के ताप को ऐसे छुपा रखा था कि हमें सिर्फ रोशनी मिले, उसकी ऊर्जा मिले, गर्मी नहीं। और ये महसूस हो कि अन्धेरे का तो जन्म ही नहीं हुआ है और सूरज भी सिर्फ प्रकाश देने के लिए ही है।

ऐसी ढाल....ऐसी छांव....ऐसी रोशनी आज हमारे जीवन में अब नही रही है। ताप का एहसास अब हो रहा है,

अन्धेरा सा भी छा गया है, शायद सदा के लिए। अब आप ही देखें कि आपकी रोशनी और छाया कैसे हमारी आने वाली पीढ़ी को वैसे ही सम्बल प्रदान करेगी ।

पिछले 08 दिन से इस घर और इस शहर में रह रहा हूं। शायद बहुत सालों, नहीं शायद दशकों बाद यह मौका आया है। पर देखो तो मौका कब आया है? 08 दिन से जब भी हर रोज में उनके कमरे के पास से गुजरा तो हमेशा ये लगा कि शायद वो पहले की तरह अपने बिस्तर में चुपचाप लेटे हैं और ये सोचकर कि नवीन आया है। मुझे आवाज भी दे सकते हैं। पर ये क्या आवाज तो आई ही नहीं। कमरा बेजान सा बिना आत्मा के लगा। उनकी अलमारी में रखी किताबें, जयपुर से आप द्वारा लाये मुझे मिले मोमेन्टो, दीवारों पर लगी तस्वीरें लगा सब में आपकी आहट सी है। अब ये आहटें कैसे भूलेंगी यह पता नहीं? मन बार-बार यह सोचकर डूब जाता है कि अलमारी कभी नहीं खुलेगी और किताबें शायद यूँ ही करीने से लगी रहेंगी। किसी को मोमेन्टों और तस्वीरें दिखाते हुए आपके चेहरे पर आने वाली चमक अब कोई नहीं देख पायेगा। यह सब सोचते हुए ही कलेजा मुंह में आ रहा, लेकिन आपके बिना आंसू बहाना अच्छा भी नहीं है आप बोलोगे इतना समझदार था। लेकिन आंसू तो मन ही मन अब बहते रहेंगे।

आज अब आप हमारे बीच में नहीं हैं तो लगता है कि आपका होना क्या था? लगता है आपका होना ही त्योहार था-पर हम शायद मना नहीं पाए। आपके रहने से ही हर तरफ मंगल था- जो हमारे जहन तक में नहीं आया। आप ही एक पूरी लाइब्रेरी थे, जिनका ज्ञान हमारे नथुनों तक नहीं पहुंचा। आपकी हर बात के, हर सुझाव के, हर संकेत के, हर हाँ के, हर ना के, सभी के मायने अचानक समझ में आ रहे हैं, तो लगता है कि कितना बड़ा खजाना हाथ में था और भटक हम कस्तूरी मृग की तरह रहे थे। काश! आप लौट सकते हम अब आपकी बातों से कुछ मोती चुन सकते। पर अब ये सब तो इतिहास में चला गया। आपसे तो ख्वाबों में ही मिलकर शायद कुछ बटोर पाएं।

पुत्र होने के नाते आपके ऋणी रहेंगे। आज देखता हूँ कि पिता अपने बच्चों की बांह थामें, स्कूल, कॉलेज, कोचिंग क्लास और यहां तक कि परीक्षा के कक्ष तक ले जाते हैं, फिर आपको याद करता ही था, तो लगता था -अरे हमारे पिताजी तो हमारे साथ नहीं आये तो यह खयाल आया -आज हम जहां हैं, जैसे हैं, यह भी उसी आम आदमी की सोच से हुआ - परिंदों के बच्चे घोंसले से फेंके जाने पर ही उड़ना सीखते हैं, न कि उनके कंधों पर बैठकर सैर करने से। आपका ऋण उतार पाना अब संभव नहीं है। अपने बच्चों को वही संस्कार देकर कुछ ब्याज चुकाने का प्रयास करूंगा। आप कम जिये और 10-20 वर्ष जीते... फिर लगता है पिता भी कोई उम्र से बंधता है! 100 साल जीकर भी साथ छोड़ें तो होगा तो दुख ही। जितने वर्ष भी आपकी छांव में जिये, हमारा अति सौभाग्य है। कइयों को अपने पिता के साथ देखूँगा तो दुखी होता रहूँगा, तो वहीं कइयों के मुकाबले सौभाग्यशाली भी तो महसूस होगा -यह तसल्ली है।

आपको लगातार याद करेंगे, हमेशा याद करेंगे, बेवजह याद करेंगे क्योंकि मैं मानता हूँ कि वजह तो आभार के लिए होती है, वजह तो व्यापार के लिए होती है, प्यार के लिए वजह की तलाश नहीं होती...प्यारे पापा आप जहां भी हो खुश रहना, वहां जल्दबाजी बिल्कुल मत करना, थोड़ा रिलैक्स करना, बहुत काम किया अब चिंता मत करना। आपका नाम सदा रहे हम हमेशा कोशिश करते रहेंगे। कम से कम जब तक हम रहें तब तक आपका नाम रहे।

नवीन जैन (IAS)
मिशन निदेशक
एनएचएम, राजस्थान

वजूद से लड़ती परिवहन सेवा

संस्कृति की बात करते थे
संस्कृत का श्लोक छीन लिया

राजस्थान रोडवेज अपने माथे पर अर्से तक 'शुभास्ते पन्थानु सन्तु' की इबारत लिख कर सफर करती रही। मगर अब इस श्लोक के दिन आ गए है। यह श्लोक रोडवेज का ध्येय वाक्य है। इसका मतलब है 'आपकी यात्रा सुगम हो। लेकिन सरकार ने कुछ यूँ किया कि पांच दशक पुरानी इस परिवहन सेवा को अपने वजूद के लिए लड़ना पड़ रहा है।

किसी शायर ने कहा है 'वो जहर देता तो दुनिया की नजरों में आ जाता, सो उसने यूँ किया कि वक्त पर दवा न दी।' सरकार ने बसों की खरीद पर रोक लगाए रखी। दूसरी तरफ चुपके से अनुबंध के नाम से रोडवेज का मार्ग और मैदान प्राइवेट बसों को दे दिया। इनमें से ज्यादातर प्राइवेट बसे पड़ोसी राज्य पंजाब के एक नेता के करीबी की है। रोडवेज कर्मचारी हड़ताल पर है। वे बेबस है। वे एक जीवंत संस्था को मरते हुए देख रहे हैं। सत्तापक्ष चुप है, विपक्ष भी खामोश है।

रोडवेज ने लम्बा सफर तय किया है। पचास साल पहले जब इसकी बुनियाद रखी गई, आठ डिपो, 421 बसें, 45 हजार किमी. का मार्ग और हर रोज 29 हजार यात्री सफर करते थे।

> निजीकरण करने की यह आजमायी हुई तकनीक है। पहले उस सरकारी संस्थान या उपक्रम को बीमार करो। यह पुख्ता करो कि वहां काम न हो। लोग नाराज हो और फिर आप उसे प्राइवेट हाथो में सौंप दो।
>
> **-नोआम चोम्स्की,**
> **अमेरिकन दार्शनिक**

अभी कुनबा बड़ा है। इसमें 52 डिपो, और 4700 बसों का बेड़ा शमिल है। हर रोज रोडवेज साढ़े नौ लाख लोगों को उनके गंतव्य तक पहुंचाती है। इसके पास 18 लाख किमी. का मार्ग है। प्राइवेट ने लाभदायक मार्ग हथियाने शुरू कर दिए है। रियल एस्टेट की नजर इसके बस अड्डों पर है। क्योंकि हर बस अड्डा शहर के बीचों बीच है।

बेशक रोडवेज घाटे में है। बेशक कुछ कर्मचारी भ्रष्टाचार में शामिल है लेकिन घाटे में तो सरकार भी होती है। क्या आप उसे छोड़ देते हो? देश में 54 सरकारी रोडवेज हैं। इनमें अधिकांश घाटे में है। दिल्ली की डी.टी.सी. घाटे में सबसे ऊपर है। मगर कुछ रोडवेज मुनाफा भी कमा रही है। जैसे यूपी, कर्नाटका, उड़ीसा, हिमाचल और बेंगलोर मेट्रो बस सेवा। क्या हम इन लाभ कमाने वाली सड़क परिवहन सेवाओं से कुछ नहीं सीख सकते?

देश में 19 लाख बसे हैं। इनमें से दो लाख 80 हजार सरकारी रोडवेज की बसें हैं। परिवहन मंत्रालय कहता है देश में 30 लाख बसों की जरूरत है। पिछले दिनों नितिन गडकरी ने कहा 'चीन में एक हजार लोगों पर छह बसे हैं। भारत में दस हजार लोगों पर चार बसें हैं। भारत के नब्बे फीसद लोगों के पास कोई वाहन नहीं है। अब लगता है सरकार इस बेबस आबादी को प्राइवेट बस मालिकों की मर्जी पर छोड़ना चाहती है। इनमें किसी की मंजिल मजदूरी के लिए कोई मकाम है तो कोई जीवन के ऐसे ही तकाजों के लिए सफर करता है।

पंजाब पड़ोस में है। वहां बादल सरकार से जनता की तकलीफ देखी नहीं गई। सरकार ने धीरे-धीरे सरकारी रोडवेज को बेजान कर दिया। अखबारी रिपोर्टों के मुताबिक, 2007 में सत्ताधारी दल के एक राजनैतिक परिवार के पास दस बसें थी। अब उनके पास एक हजार बसें हैं। पंजाब रोडवेज के कर्मचारी आवाज उठाते रहे। मगर किसी ने नहीं सुनी।

तमाम बदइंतजामी के बावजूद सरकारी रोडवेज प्राइवेट से बेहतर है। क्योंकि किसी घटना पर सरकारी रोडवेज को जवाबदेह ठहराया जा सकता है। प्राइवेट के खिलाफ कहीं सुनवाई नहीं होती। उनके पास बाहुबल भी है। हमें भी राजनीति से सवाल पूछना चाहिए कि जब आपका जीवन सार्वजनिक है तो पैरोकारी प्राइवेट की क्यों?

नारायण बारेठ

गतांक से आगे....

उड़ती चील का अण्डा

''उड़ती चील का अण्डा'' एक मुहावरा है जो ग्राम्यांचल में प्रचलित है। किंवदन्ती यह है कि 'चील' उड़ते-उड़ते ही अण्डा देती है। उसका अण्डा भूमि परआकर असहायावस्था में गिरता है और बिना मां के ही उसका जीवन अनिश्चय की स्थिति में पलता और चलता है। वह जीवित भी रहेगा या नहीं, कुछ कहा नहीं जा सकता। इसी प्रकार जब किसी शिशु की माता उसके बचपन में ही अपनी संतान को बेसहारा छोड़कर स्वर्ग सिधार जाती है, तो ऐसे शिशु को समाज ''उड़ती चील का अण्डा'' कह-कहकर अपनी संवेदना व्यक्त करता है।

किसान का जीवन किसी तपस्वी से कम नहीं होता। वह रात-दिन खेतों पर ही रहता है। 'दिन भर काम और रात में राम-राम', खेतों पर जागकर एक सच्चे योगी की भूमिका निभानी पड़ती है। किसान कभी आलस्य नहीं दिखाता क्योंकि-

''आलस-नींद किसान को खोवै।
चोर को खोवै खांसी।
टका ब्याज बैरागी को खोवै।
रांड़ को खोवै हांसी।।''

किसान पर यह उक्ति सटीक बैठती है। किसान को आठों प्रहर और चौसठ घड़ी शूली-सी पर टँगा रहना पड़ता है। उसकी दृष्टि हर क्षण अपने खेतों पर ही रहती है। जो किसान अपने खेतों की उपेक्षा करके गईजों में घूमता रहता है, उसकी खेती चौपट हो जाती है। इस तथ्य की पुष्टि इन शब्दों में होती है-

''सावन मास गईजे कीये,
भादों खाये पूआ।
मैंड़-मैंड़ पर बूझत फिरता
तेरे कितना हुआ।''

स्पष्ट है-सावन और भादों में तो किसान को किसी भी हालत में खेत छोड़कर बाहर नहीं जाना चाहिए।

खेती चौड़े का मवासा होती है। बीज बोने से लेकर माल घर में रखने तक छीजन ही छीजन है। इसी कारण किसान सदा निर्धन और कर्जदार ही रहता है। गांवों में लड़ाई-झगड़े बहुत अधिक होते हैं, बात-बात में लाठियां और गोलियां चल जाती हैं। फिर कोर्ट-

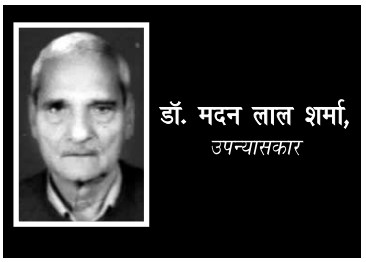

डॉ. मदन लाल शर्मा,
उपन्यासकार

कचहरी और थाने के चक्कर काटने पड़ते हैं। घर और खेती बर्बाद हो जाती है। इसीलिए किसान सदा रूखा-भूखा और सूखा ही रहता है।

गणेश के सामने भी ये सभी आपदायें थीं, परन्तु उसकी कर्मठता-सजगता-ईमानदारी-सहिष्णुता-दूरदर्शिता और शारीरिक व आज्ञाकारिणी पत्नी। देव तुल्य दानी-धर्मी माता-पिता। नीरोग शरीर। अच्छी पैदावार। लेन-देन की अच्छी दृष्टि, आदि गुण और सुविधाओं के कारण गणेश गणेशवत् विघन-विनाशक बनकर सभी को सुख पहुंचाने में ही निमग्न रहते थे।

गणेश की माता सरस्वती तो साक्षात् देवी ही थीं। उनका जन्म तो काशी में हुआ था और ब्याह घोर गांव में। शहरी सुख में पली-बढ़ी सरस्वती दिव्य गुणों की खान थीं। वह एक ऐसी तपस्विनी थीं कि उनके लिए शहर और गांव, हाट और खलिहान, चक्की और चकरी, काम और आराम, रूखी और चुपड़ी, रेशम और खद्दर, मान और अपमान, जाड़ा-गर्मी और बरसात, शत्रु और मित्र, दु:ख और सुख, गरीबी और अमीरी, झोंपड़ी और महल, धूल और अंगराग, निंदा और प्रशंसा सभी बराबर थे। सरस्वती देवी के हृदय में दया, तन में स्फूर्ति, मन में संतोष, प्रज्ञा में स्थैर्य, विकारों से वैमुख्य, सांसारिकता से अनभिज्ञता, आलस्य-अकर्मण्यता-नारी सुलभ बहानेबाजी और नाटकीयता से घृणा। भूत-प्रेत और चुड़ैलों की छाया से मुक्ति। टोना-टोटकों में अंधविश्वास। आत्मा में दृढ़ता। ईश्वर में विश्वास। फालतू देवी-देवताओं से ओला-पल्ला। नारी के आदर्शों का दृढ़ता से पालन। धार्मिक कार्यों के निर्वाह की तत्परता। जीवन में अनुपम सादगी और भावना में दैवी चमक तथा 'अहर्निशंसेवामहे' का निर्वाह, आदि सभी दिव्य गुण माता सरस्वती जी के जीवन की थाती थे, जिनको वे किसी भी कीमत पर विसर्जन नहीं करना चाहती थीं।

माता सरस्वती का जीवन देवहूति तथा लोपामुद्रा आदि विदुषी नारियों के समान था जो जन्मना तो राजकन्याएँ थीं, परन्तु उन्होंने विवाह के पश्चात अपना जीवन महलों को त्यागकर स्वेच्छा से झोंपड़ियों में बिताया था। सरस्वती देवी का आदर्श भी इनसे कम नहीं था। क्योंकि काशी जैसे महानगर में जन्मी एक शिक्षित बालिका ने गणेशपुर जैसे जंगली गांव में रहकर प्रसन्नता से जीवन यापन किया था। 'हिम-आतप-बाता' के कष्ट सहन किये थे और मुँह नहीं मोड़ा था। **...क्रमशः अगले अंक में**

प्रेम-पत्र

14 सितम्बर हमेशा मुझे केंद्रीय विद्यालय के उन गलियारों में वापस ले जाता है, जहाँ हमारा इश्क परवान चढ़ा था।दपहले प्यार की बात ही कुछ और होती है, विज्ञान के अध्यापकों से नज़रें बचाकर, किताबों के बीच उससे आँखें चार कर ही लेती थी। हमारे इश्क का सिलसिला शुरू हो गया था,पहले पत्र, फिर कविताएँ? फिर उसी के रंग में रंगी कहानियाँ। रसायन विज्ञान के क्रियाशील तत्वों के बारे में सुनते-सुनते मैं उसके साथ सपनों में दिल्ली विश्वविद्यालय की गलियों में घूम आती थी, और कल्पना की उड़ान भरते-भरते, ख्यालों में विद्यार्थियों के संशय भी दूर कर देती थी? और जब रसायन विज्ञान के सर किसी प्रश्न का जवाब पूछते थे, ऐसा लगता था मानो वास्तविकता की जमीन पर किसी ने जोर से धक्का दे दिया हो। 'छन से जो टूटे कोई सपना' वाला एहसास जागृत होता था। पर चारों तरफ विज्ञान और विज्ञान की बातों से घिरे रहने के बावजूद ना मैंने उसका साथ छोड़ा ना उसने मुझसे अलग होना चाहा। डरते-डरते पापा को अपने पहले इश्क के बारे में बताया भी, पापा का जवाब था 'इश्क के सहारे जिंदगी नहीं कटती, पेट नहीं भरता' पर वो उम्र ही कुछ ऐसी होती है, हमेशा बगावत के लिए तैयार। बगावत की रणभेरी ने हुंकार भरी ही थी कि परिवार वालों ने रिश्ता तय कर दिया.....फिर पापा के सपनों के लिए बेमन से मैंने उस रिश्ते के लिए हाँ कर दी थी कोशिश पूरी की ईमानदारी से रिश्ता निभाने की, धक्का देकर इस रिश्ते को यहाँ तक पहुँचाया भी पर बस अब और नहीं होता। मुझे पता है यह गलत है, पर क्या जो मेरे साथ हुआ था, वो गलत नहीं था? मेरी चाहत जाने बिना मेरा रिश्ता तय कर देना क्या वो सही था? इसलिए आज मुझे उसे पीछे छोड़ने का यह कठोर निर्णय लेना पड़ा। Biochemistry मैं बेवफा नहीं पर हिंदी के लिए मेरा पहला प्यार सच्चा है? और मैं वापस हिंदी के सुकून भरे आगोश में आकर खुश हूँ, संतुष्ट हूँ । सुनो हिंदी मुझे तुमसे प्यार है,

नित्या शुक्ला

कंचन शर्मा 'ग्लोबल प्राईड अवार्ड 2018' से सम्मानित

14 सितम्बर को होटल औडरिया पैलेस में आयोजित अवॉर्ड फोर एक्सीलेंस में जयपुर की कंचन शर्मा को पत्रकारिता और सामाजिक सेवाओं, डा. अपेक्षा को मैडिकल में सराहनीय योगदान के लिये सम्मानित किया गया। इसमें देश भर से चयनित प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाता है। आयोजक मोहम्मद फैजल समाजसेवी राधेश्याम व राजस्थान पुलिस सेवा की अधिकारी सुनीता मीना के द्वारा ये अवॉर्ड दिया गया।

प्रेम में प्रतिकार कैसा?

परवाने की दीवानगी पर शमा ने आँसू बहाए।
ओ मीत! प्रीत में तुम क्यों जलने चले आये?
शलभ और दीप का रक्तरंजित त्योहार कैसा?
प्रेम में यह बलिदान कैसा?
प्रेम में प्रतिकार कैसा?

कंटकों के बीच भ्रमर का पुष्प पर मंडराना,
पंखुड़ियों का शूल भरे आगोश में मुस्कुराना,
भ्रमर की गुंजन लगे वीणा की झंकार जैसा।
प्रेम का यह अपूर्व संस्कार कैसा?
प्रेम में प्रतिकार कैसा?

शबनम के अश्रुओं को रवि ने दी सदाएँ ,
रश्मियों के रथ पर नभ-फेरी पर चली आयें।
मन को लगे यह माननी के मनुहार जैसा,
प्रेम में कोई आभार कैसा?
प्रेम में प्रतिकार कैसा?

कुमुदनी ने चाँदनी को गुपचुप बुलाया,
रुपहले आँचल को सुगंध से सजाया,
चाँद को लगे रूपसी के अभिसार जैसा,
प्रेम में यह अधिकार कैसा?
प्रेम में प्रतिकार कैसा?

पपीहे की पिहू-पिहू,कोयल की कुहू-कुहू,
मधुप की गुन-गुन, नव-दुल्हन की छुन-छुन,
स्वरों की रागिनी को लगे मधुर झंकार जैसा,
प्रेम का यह अद्भुत संसार कैसा?
प्रेम में प्रतिकार कैसा?

शील निगम
मैन्चेस्टर (यू.के.)

बाबुल...

बाद मुद्दत के वो जमाना याद आया
मेरे बाबुल की बाँहों का सहारा याद आया।
हँसते रोते जो दिन बीते थे उसके आँगन में
प्यार बेशुमार मेरे बाबुल का मुझे याद आया।।

हर शरारत पे मेरी उसका मुझे वो समझाना
और सर पे मेरे ममता भरा हाथ फिराना।
आज याद आया मुझे बाबुल का आँगन वो सुहाना
बातें हजार होती थी तब मुझे तुम्हें बताने को।।

आज सिर्फ आहे होती हैं बाबुल तुम्हें सुनाने को
रोता है दिल जार जार मेरा
जब याद तुम्हारी आती है।
एक एक बात तुम्हारी वो गुजरे जमाने की
वो बचपन के दिन वो तेरी बाहो के झूले।।

वो मेरी बेबाक जिदें और तेरी सलाहें
सब याद आती है रे बाबुल बहुत याद आती है।
आज कोई नहीं मुझको मनाने को

प्यार से मेरे सर पे हाथ फिराने को।।
सम्हालने को मुझे और सराहने को
ओ मेरे बाबुल क्यो ब्याही मैं बिदेस।
काट के पंख मेरे ये
आकाश दिया क्यों मुझको!

रितु गोड़ियाल
कतर

पापा के जूते...

बड़े गुस्से से मैं घर से चला आया
इतना गुस्सा था कि गलती से
पापा के जूते पहने गए
मैं आज घर छोड़ दूंगा बस
और तभी लौटूंगा जब
बहुत बड़ा आदमी बन जाऊंगा
जब मोटर साइकिल नहीं दिलवा सकते थे
तो क्यूँ इंजीनियर बनाने के सपने देखते हैं
आज मैं उठा लाया था
उस नाकारा पापा का पर्स भी ....
जिसे किसी को हाथ तक
न लगाने देते थे
मुझे पता है जरूर इस पर्स मैं जरूर
पैसों के हिसाब की डायरी होगी ....
पता तो चले कितना माल छुपाया है,
माँ से भी
इसीलिए हाथ नहीं
लगाने देते किसी को
जैसे ही कच्चे रस्ते से सड़क पर आया
मुझे लगा जूतों में कुछ चुभ रहा है
मैंने जूता निकाल कर देखा .....
मेरी एडी से थोड़ा सा खून
रिस आया था
जूते की कोई कील निकली हुयी थी
दर्द तो हुआ पर गुस्सा बहुत था
और मुझे जाना ही था
घर छोड़कर
जैसे ही कुछ दूर चला
मुझे पांवों में गीला-गीला लगा
सड़क पर पानी बिखरा पड़ा था
पाँव उठा के देखा तो
जूते का तला टुटा था
जैसे तैसे लंगडाकर बस स्टॉप पहुंचा
पता चला एक घंटे तक
कोई बस नहीं थी
मैंने सोचा क्यों न पर्स की
तलाशी ली जाये
मैंने पर्स खोला एक पर्ची दिखाई दी
लिखा था लैपटॉप के लिए 40 हजार
उधार लिए

पर लैपटॉप तो घर मैं मेरे पास है?
दूसरा एक मुड़ा हुआ पन्ना देखा
उसमें उनके ऑफिस के किसी हॉबी डे का लिखा था
उन्होंने हॉबी लिखी अच्छे जूते पहनना
ओह! अच्छे जूते पहनना?
पर उनके जूते तो!
माँ पिछले चार महीने से हर पहली को कहती है नए जूते ले लो
और वे हर बार कहते
अभी तो 6 महीने जूते और चलेंगे
मैं अब समझा कितने चलेंगे
तीसरी पर्ची
पुराना स्कूटर दीजिये एक्सचेंज में नयी मोटर साइकिल ले जाइये
पढ़ते ही दिमाग घूम गया
पापा का स्कूटर ओह!
मैं घर की ओर भागा...अब पांवों मे .....वो कील न चुभ रही थी
मैं घर पहुंचा, न पापा थे न स्कूटर
ओह! नहीं
मैं समझ गया कहाँ गए
मैं दौड़ा और एजेंसी पर पहुंचा.....
पापा वहीं थे। मैंने उनके गले से लिपट गया और
आंसुओं से उनका कन्धा भिगो दिया
नहीं पापा नहीं
मुझे नहीं चाहिए मोटर साइकिल, बस आप नए जूते ले लो
और मुझे अब बड़ा आदमी बनना है, आपके तरीके से।

संजय नायक 'शिल्प'
झुन्झुनू (राज.)

सुमधुर नवांकुर

माह का उत्कृष्ट कवि/शायर

माही संदेश

प्रत्येक माह हम परिचय कराएंगे सुमधुर साहित्यिक संस्था के एक नवांकुर कवि/शायर से...

मैं तुम्हारी ही तरह लिखता हूँ, मनगढ़ंत
गन्धहीन, स्वादविहीन लघुकथाएँ

इनमें होता है निश्चल सवेरा
बाग के ताजा फूल सा स्वस्थ प्रेम,
स्टेशन पर भटूरे बेचती विस्मित आँखें
मुसाफिरों के हाथों लूटती मजदूरियत
इजहार के बाद जवाब मिलने की उत्सुकता में
जीवन के क्षणों का अधीर वनवास,

कभी होता है खोखली आस्था का जिक्र
कभी घोर विश्वास की आस्था के क़िस्से,
अघोरियों के स्वछंद ठहाके,
देहाती की फटी मटमैली धोती की जेब में
फिर एक और जेब होने का अचरज,

ढकोसलों के तानों में लिपटे रिश्तों की
दम घोंटती कवायदें,
खेत की मेड़ पर टेढ़े मुंह किये चीखते
रेडियो पर सुरमयी तान में बजती स्वर-लहरियां
महबूबा के ताने, पिता का उपहास,
कभी माँ के 3 बरस पुराने बटुए में नब्बे रूपये निकलने
की दास्तानें,

और घर के कोने में बूढ़ा हो चला वो कलेंडर
जो भविष्य खोजने के लिए लगाया था कभी,
आज उसमें सभी कुछ भूतकाल की बातें हो चुकी हैं,
मन की देह पर लिखा अमिट इतिहास,
मैं तुम्हारी ही तरह लिखता हूँ, मनगढ़ंत
गन्धहीन, स्वादविहीन लघुकथाएँ।

मैं लिखता हूँ कलाकारों के दार्शनिक चरित्र
नायिका की मनोस्थिति,
नायक के स्वभाव का विश्लेषणात्मक चित्रण,
अकेलेपन की ऊब,
रेल का किसी स्टेशन पर अचानक बेबात खड़े रहना
जब की पटरियां सुनसान है,
बस से अचानक गायब हुये इंसान के इंतजार में सवारियों,
कंडक्टर, ड्राइवर की तीखी बहस,
शहर में रास्ता पूछने पर मोटे आदमी का पैरों पर पान
थूककर बोलना, मालूम नहीं,
फूल माली का बरसों से मालाएँ गूंथना,
ढाबे पर बिन धुली एक ही थाली में
दस लोगों को खिला देना,
म्यूजिक कम्पनी की पूरानी गायिका की जगह
नई का आना,
मुलाकात का मोहब्बत में बदलना,
और इश्क का आखिरी मुलाकात में ढलना,
मैं तुम्हारी ही तरह लिखता हूँ, मनगढ़ंत
गन्धहीन, स्वादविहीन लघुकथाएँ

मैं लिखता हूँ
नानक की वाणी, ईशा की माफियां
मोहम्मद की सच्ची सीखों के बिगड़े स्वरूप
तुलसी को मात्र कवि कहा जाना
कबीर का ऊहापोह, रहीम के उवाचः,
दादू प्रवास, बौद्ध गमन, महावीर वचन,
कैकयी का हट, मंथरा का श्राप, दसरथ विलाप,
राम का वनवास, उर्मिला का दुःख,
विभिषण का अपमान, और रावण वध
लिखता हूँ कर्ण का दान, दुर्योधन का दंभ, दुषाशन अभिमान
भीष्म प्रतिज्ञा, कौरव अयोग्यता, पांचाली अपमान
लिखता हूँ
कृष्ण पदचाप,
उठा था जो नापने भूगोल का समस्त कण कण
युग के अंधकार मयी धरा पर,
उठा था पवन का प्रचण्ड झोंक
ओर गुजरा समस्त पांडवों के हृय को चीरकर,

लिखता हूँ
क्षितिज के पार मुक्ति का अपरिचित इष्ट
मंझधार में उमड़ते झंझावातों का अनिष्ट,
दिशाओं का ज्ञान, धरती की कोख में उबलते लावे के ठंडे
पड़ने की प्रतीक्षा का सच,
तिलमिलाती झूंठ के पर्दे के पार की गाथा,
नदियों के सूखने का डर, सहेजने की आस,
जगत विस्तार, ब्रह्मांड की व्याख्या, विज्ञान की पराकाष्ठा,
और कहीं दूर तक फैला अलौकिक विस्तार,
खामोशी की बातें, हल्लो का शोर
थम जायेगा इक दिन, समय से पहले सचमुच
मैं तुम्हारी ही तरह लिखता हूँ, मनगढ़ंत
गन्धहीन, स्वादविहीन लघुकथाएँ।

शक्ति बारैठ
जयपुर

लम्हे कार्यक्रम के अंतर्गत मनाया गया लता मंगेशकर का जन्मदिवस

इंडियन आइडल एकेडमी जयपुर की ओर से महाराणा प्रताप ऑडिटोरियम में लम्हे नामक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुंबई के गायक राजू दास और जयपुर की अंबिका मिश्रा ने फिल्मी गीतों व गजलों की प्रस्तुतियां दी, मखमली आवाज में प्रस्तुति इतनी सुंदर थी कि हर श्रोता मंत्रमुग्ध नजर आया। गौरतलब है कि राजू दास किराना घराने के उस्ताद मशकूर अली खान और बादल चौधरी सरीखे फनकारों के शिष्य हैं, वहीं अंबिका मिश्रा उस्ताद अकरम साबरी और शास्त्रीय गायक पं दिनेश चंद गोस्वामी की शिष्या हैं। इस अवसर पर शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए संगीज गुरु पं दिनेश चंद गोस्वामी को अकादमी की ओर से लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से स मानित किया गया। कार्यक्रम के मु य अतिथि पद्मश्री राजेश कोटेचा व अध्यक्षता राजस्थान संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष अशोक पांड्या ने की। कार्यक्रम का आयोजन संगीत नाटक कला अकादमी व गौरव ग्रुप के सहयोग से किया गया।

इस अवसर पर फिल्म वीर जारा के लिए लता मंगेशकर और रूपकुमार राठौड़ के गाये गीत तेरे लिए की री लॉन्चिंग की गई। राजू दास और अंबिका मिश्रा ने इस गीत की नई कंपोजीशन तैयार करके इसे अलग अंदाज में पेश किया है। इस अवसर पर राजू दास ने जयपुर की योगिता शर्मा जीनत की लिखी एक गजल गमे हालात की स्याही देकर, लोग हंसते हैं तबाही देकर सुनाकर कार्यक्रम में चार चांद लगा दिए।

'माही संदेश' में विज्ञापन दें

एक स्वाभाविक प्रश्न जो मन में आता है कि आप 'माही संदेश' मासिक पत्रिका में विज्ञापन क्यों दें.....तो इसके लिए आपके पास बहुत से कारण हैं..जैसे,

वर्तमान में युवा पीढ़ी साहित्य की ओर बहुत तेजी से आकर्षित हो रही है और 'माही संदेश' पत्रिका में साहित्य पक्ष पर सर्वाधिक बल दिया गया है और इसका प्रकाशन अनुभवी साहित्यिक व्यक्तियों द्वारा किया जा रहा है जिससे युवा पीढ़ी तक आप सहज ही पहुंच सकते हैं।

हमारे साथ जुड़े विभिन्न सामाजिक संगठन एवं संस्थाओं में 'माही संदेश' मासिक पत्रिका निरंतर पहुंचेगी जिससे आपका विज्ञापन हर आयुवर्ग के व्यक्ति तक पहुंच पायेगा।

'माही संदेश' मासिक पत्रिका गुणवत्ता युक्त पाठ्य सामग्री को समेटे हुए हैं जिससे इसका एक व्यापक पाठक वर्ग है।

विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के विशेष कवरेज के कारण निश्चित रूप से हमारे साथ आप भी शीघ्रता से निरन्तर आगे बढ़ेंगे ऐसा हमारा प्रयास और विश्वास है।

खोखले दावों के विपरीत वास्तविकता के धरातल पर हम आपका हमारे साथ जुड़ने पर स्वागत करते हैं।

'माही संदेश' मासिक पत्रिका विज्ञापन दर

सामने के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन	₹ 20,000
पीछे का कवर रंगीन	₹ 30,000
पीछे के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन	₹ 20,000
अंदर का सामान्य श्वेत श्याम पृष्ठ	₹ 10,000
अंदर का सामान्य श्वेत श्याम आधा पृष्ठ	₹ 6,000

संपादक
माही सन्देश
खाता संख्या
37802854186
IFSC: SBIN0032385
भारतीय स्टेट बैंक
शाखाः कनक विहार,
हीरापुरा, जयपुर
पेटीएम-9887409303
दूरभाष- 9887409303

शिक्षक दिवस पर डॉ. हरिसिंह गोदारा ने किया मौन उपवास

उदयपुरवाटी में शांति व समृद्धि के लिए झुंझुनु जिले के सिंगनोर गांव के राष्ट्रपति सम्मान से विभूषित शिक्षक डॉ. हरिसिंह गोदारा ने शिक्षक दिवस पर उपखण्ड कार्यालय उदयपुरवाटी के पास एक दिवसीय मौन उपवास किया। उदयपुरवाटी को भय, भूख और भ्रष्टाचार से मुक्ति दिलाने के संकल्प के साथ किए गए इस कार्यक्रम में विभिन्न गांवों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

डॉ. गोदारा पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की प्रेरणा से सेवानिवृत्ति के बाद सार्वजनिक जीवन मे सक्रिय होकर सरपंच बने। अब वे राजनैतिक व सामाजिक जीवन में आ रही नैतिकता की भारी गिरावट से व्यथित होकर जनता को वैकल्पिक राजनीति के लिए तैयार कर रहे हैं। इसी श्रृंखला में शिक्षक दिवस पर आज सैकड़ों समर्थकों के साथ मौन उपवास किया।

डॉ. गोदारा का कहना है कि हमारे उदयपुरवाटी की धरती त्याग व बलिदान की धरती रही है। आजादी के समय से किसान आंदोलन के शहीद करणीराम जी, रामदेव जी के पावन बलिदान की धरा उदयपुरवाटी में पिछले एक दशक से ज्यादा समय में सार्वजनिक जीवन में भारी गिरावट आई है। हमारे यहाँ से शिवनाथ सिंह जी, जीवराज सिंह जी छापोली, इन्द्र सिंह जी पौंख, रामेश्वर जी सैनी जैसे नेतृत्व ने इस धरती को गौरवान्वित किया है। अब वे हमारे मध्य नहीं है। किन्तु स्वर्ग में ये पुण्य आत्मायें क्या सोचती होंगी? आज भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष मदनलाल सैनी जैसे सार्वजनिक जीवन में राष्ट्रीय स्तर पर अपना स्थान रखने वाले कर्मयोगी हमारे यहाँ से विधायक रहे हैं। गुढ़ा के ठाकुर वीपी सिंह, भोलाराम सैनी जैसे सरल स्वभाव के धनी हमारे विधायक रहे हैं। आज क्या स्थिति है... घोर जातिवादी व साम्प्रदायिक तनाव को अपनी राजनीति का टूल समझने वाले हमारा नेतृत्व कर रहे हैं। बजरी माफिया, टोल माफिया, भू-माफिया, शराब माफिया सार्वजनिक जीवन में हावी हो गये। जनता को वैकल्पिक राजनीति के लिए आगे आने के लिए हम सब प्रयासरत हैं। जनता से अपील करते हुए डॉ. गोदारा कहते हैं कि जब राजनैतिक सत्ता दायित्वों से विमुख हो जाये तो जनता को चैतो, एकौ व खुड़को अर्थात् चेतना, एकता व बदलाव के लिए पहल करनी चाहिए अन्यथा हमारे उदयपुरवाटी को लुटेरे लूटते रहेंगे।

कार्यक्रम में सुमेर सिंह शेखावत, एडवोकेट रामनिवास सैनी, श्याम सुंदर छीपा, अनिल कुड़ी, उपेन्द्र भारद्वाज, महेश सैनी, शक्ति सिंह सहित सैकड़ों गणमान्य लोग उपस्थित थे।

रैम्प पर रॉयल कल्चर खूबसूरती से बयां किया

राजस्थान की राजधानी जयपुर के क्लार्क्स आमेर में आयोजित जयपुर घूमर फेस्टिवल में पिंकसिटी की मशहूर फैशन डिजाइनर कीर्ति सिंह ने राजपुताना थीम पर रॉयल कलेक्शन शोकेस किया। कीर्ति सिंह ने बताया कि इस फैशन शो में 16 मॉडल्स ने भाग लिया। कीर्ति कहती हैं कि राजस्थान का कल्चर रिच है जिसमें राजपुताना थीम उसमें चार चांद लगाती है।

जयपुर रत्न सम्मान समारोह का आयोजन

वैशाली नगर स्थित होटल महल रजवाड़ा रिजॉर्ट मैं शक्ति फिल्म प्रोडक्शन की तरफ से जयपुर रत्न सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। जिसकी ऑर्गेनाइजर अंबालिका राज ने बताया कि जयपुर रत्न सम्मान समारोह 2018 बहुत ही वैभवशाली तरीके से संपन्न हुआ। जयपुर शहर के गणमान्य लोगों को नामांकित प्रतियोगियों के बीच सम्मान दिया गया। प्रतियोगिता के विजेताओं को कार्यक्रम संचालक अंबालिका राज ने कार्यक्रम का विवरण देते हुए इसे एक अति सफल कार्यक्रम बताया। लोगों की भारी भीड़ में विभिन्न कैटेगरी में विभिन्न-विभिन्न प्रतिभाओं को पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम के बीच में लोगों के मनोरंजन के लिए भिन्न-भिन्न तरीके की रंगारंग प्रस्तुतियां भी हुई। कार्यक्रम की शुरुआत गणेश वंदना से हुई और इसी बीच जयपुर के आलोक अग्रवाल द्वारा राजस्थानी थीम पर डांस के माध्यम से लोगों का खूब मनोरंजन किया। मुख्य अतिथि के रूप में राधेश्याम गुप्ता समाज सेवी, पल्लवी सेठी सेलिब्रिटी डिजाइनर, पवन टाक, पंडित राम मोहन शास्त्री, पुष्पा माई, आर.एस. परिहार, बृजेश पाठक थे।

साहित्य सप्तक समारोह आयोजित

जयपुर पीस फाउण्डेशन के तत्वावधान में 17 से 23 सितम्बर तक जयपुर में पहली बार साहित्य सप्तक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समारोह के दौरान प्रतिदिन साहित्य की एक विधा के साहित्यकार का सम्मान और उस विधा की समकालीन स्थिति पर विद्वान वक्ताओं द्वारा गहन विचार-विमर्श किया गया। जयपुर पीस फाउंडेशन के अध्यक्ष प्रोफेसर नरेश दाधीच ने बताया कि यह आयोजन प्रतिवर्ष होगा। हिन्दी साहित्य के शोधार्थियों और विद्यार्थियों को इससे जोड़ना और उन्हें समकालीन साहित्य से रूबरू कराना इस समारोह का ध्येय रहा है। प्रोफेसर दाधीच ने बताया कि हिंदी साहित्य सृजन की विरासत और समकालीन साहित्य से युवाओं को परिचित कराने तथा उससे अपने साहित्य सृजन को समृद्ध करने की दृष्टि से ही यह आयोजन किया जा रहा है। समारोह के सलाहकार वरिष्ठ कवि कृष्ण कल्पित, वरिष्ठ व्यंग्यकार -कवि फारूक आफरीदी, डॉ. जगदीश गिरी और राकेश कुमार रायपुरिया समारोह के सह-संयोजक की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका रही ।

17 सितम्बर को पीस फाउण्डेशन के तत्वावधान में साहित्य सप्तक समारोह के तहत मानसरोवर में प्रतिष्ठित कवि सवाई सिंह शेखावत को काव्य सृजन के लिए सारस्वत सम्मान से समादृत किया गया। वरिष्ठ कवि हेमन्त शेष ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम में समकालीन कविता विमर्श हुआ जिसमें कृष्ण कल्पित, मायामृग, सत्यनारायण, पृणु शुक्ला की भागीदारी रही। वरिष्ठ कवि कृष्ण कल्पित ने कहा कि सवाई सिंह शेखावत कविता के मौन साधक है और उन्होंने बिना किसी प्रत्याशा के कविता की साधना की है उनके सात कवित संग्रह इस साधना के ही परिणाम है। हेमन्त शेष ने कहा कि श्रेष्ठ रचना अच्छे विचार को साथ लेकर चलती है और उन्होंने कविता को कला की आवश्यकता बतलाया। शेखावत ने अपने सम्मान के लिए आभार व्यक्त करते हुए चुनिंदा रचनाएँ भी सुनाई।

फारूक आफरीदी सारस्वत सम्मान प्राप्त करते हुए

18 सितम्बर को कथेतर साहित्य के लिए डॉ. सत्यनारायण को सारस्वत सम्मान प्रदान किया गया । फाउण्डेशन के अध्यक्ष डॉ. नरेश दाधीच ने शाल ओढ़ाकर तथा डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल. समारोह के संयोजक राजेन्द्र मोहन शर्मा, प्रदीप सैनी ने सारस्वत सम्मान पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर डॉ. सत्यनारायण को सम्मानित किया। कथेतर साहित्य के लिए अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले प्रतिष्ठित लेखक डॉ. सत्यनारायण ने इस मौके पर अपनी साहित्यिक डायरी के संस्मरण सुनाए।

तेरा-मेरा प्यार अमर

गीत है,
तेरा मेरा प्यार अमर,
फिर क्यूँ मुझको लगता है डर।

तो मीलॉर्ड! प्यार और अमर शब्द से साफ जाहिर है कि गाने वाली नायिका कुंवारी है क्योंकि पत्नियों के लिए पतियों हेतु ऐसे शब्दों का प्रयोग कभी जगजाहिर नहीं हुआ। अब ये तेरा-मेरा से ये प्रमाणित होता है कि इस प्रेम में लड़की और लड़का बराबरी के पार्टनर हैं। दोनों तरफ आग बराबर लगी हुई। लेकिन मीलॉर्ड! मुद्दा यहाँ ये है कि लड़की डरी हुई है। इतना प्रगाढ़ प्रेम और उसका डर लगना। मामला अजीब है योर लॉर्डशिप। अब लड़की ना तो ब्याहता है जो ससुराल में स्वयं अग्नि दाह से खौफ खाई हो या पति शराबी कबाबी मारने पीटने वाला हो।

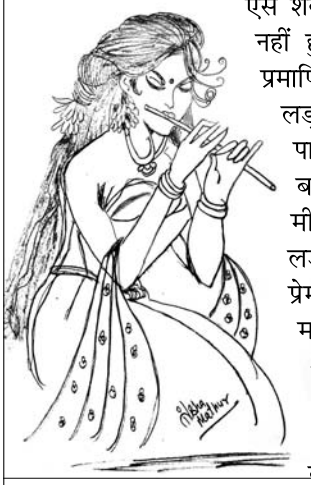

यहाँ तो लड़की का कुंवारा डर उसके प्रेमी की गलत नियत पर शक करने कारण भी हो सकता है? हो सकता है लड़की के घरवालों को उसके इश्क की खबर जा पहुंची है और पिटने या दूसरी जगह शादी करवा दिए जाने के खौफ में है। क्या फिर लड़की अपने भाई की धमकियों से डरी हो। मीलॉर्ड इस एंगल को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि हो सकता कि लड़की का कहीं और चक्कर चल रहा हो और प्यार अमरता की झूठी कसम खाते डर रही हो। या लड़का ही कहीं और भी। किसी और का भी मोबाइल चार्ज करा रहा हो। मतलब कहीं दूसरी जगह भी बंधा हो। मीलॉर्ड! कारण तो कई हो सकते हैं लेकिन इश्क का ये मामला लड़की के डरने की वजह से शक के दायरे में आता है। अदालत से दरख्वास्त है कि महिला उत्पीड़न से सम्बन्धित इस मामले की जांच का आदेश दें कि क्यों प्यार अमर होते हुए भी डर रहा है! दैट्स आल मीलॉर्ड।

रमन सैनी
गाजियाबाद

माही संदेश (राष्ट्रीय पत्रिका)

संस्थापक डॉ. मदनलाल शर्मा*

❖ ❖ ❖

प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन (98874-09303)

❖ ❖ ❖

प्रबंध निदेशक डॉ. प्रेमप्रकाश शर्मा*

❖ ❖ ❖

सह-संपादक डॉ. महेश चन्द*
नित्या शुक्ला*
दीपा सैनी*
नीरा जैन*

❖ ❖ ❖

आईटी सलाहकार सोनू श्रीवास्तव*

❖ ❖ ❖

सोशल मीडिया (सह-सम्पादक) सूर्य प्रकाश उपाध्याय*

❖ ❖ ❖

संवाददाता ईशा चौधरी*
अरविन्द कुमावत*
दीपक कृष्ण नंदन*

❖ ❖ ❖

अकादमिक सलाहकार डॉ. सुधीर सोनी*

❖ ❖ ❖

मार्केटिंग सलाहकार राजेन्द्र कुमार शर्मा*
अनिल शर्मा*

❖ ❖ ❖

मार्केटिंग एग्जीक्यूटिव रिंकी सैनी*
अजय शर्मा (8368443640)

❖ ❖ ❖

परामर्श समिति

डॉ. गीता कौशिक* बालकृष्ण शर्मा*
डॉ. रश्मि शर्मा* डॉ. मीना शर्मा*
डॉ. नीति मिश्रा* प्रकाश चन्द शर्मा*

❖ ❖ ❖

संरक्षक मंडल रामेश्वरी देवी*

❖ ❖ ❖

डिजाइनिंग सागर कम्प्यूटर 79765-17072

❖ ❖ ❖

मुद्रण कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स 9024765603

पृष्ठ संख्या : 32 आवरण सहित
प्रकाशन तिथि : प्रत्येक माह की 01 तारीख

: कार्यालय :

50-51 ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021 (राजस्थान)।

ई-मेल : mahisandesheditor@yahoo.com
mahisandesh31@gmail.com

मोबाइल : 9887409303

पत्रिका में प्रकाशित आलेख-रचनाएं, साक्षात्कार लेखकों के निजी विचार हैं। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर होगा। चित्र व लेख के कुछ आंकड़ों को इंटरनेट वेबसाइटों से संकलित किया गया है।

नाम के आगे अंकित (*) चिह्न अवैतनिक है।

माही संदेश

मासिक पत्रिका के सदस्य बनें

: कार्यालय :

माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर (राजस्थान)।

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : ₹ 400
पंचवर्षीय : ₹ 2000
आजीवन : ₹ 5000

चेक 'Mahi sandesh' (माही संदेश) के नाम से देय एवं रेखांकित होना चाहिए। प्रति मंगवाने पर अतिरिक्त डाकखर्च शुल्क प्रति वर्ष ₹ 100 अतिरिक्त भेजें।

भवदीय,
'रोहित कृष्ण नंदन'
संपादक
'माही सन्देश'

खाता संख्या : 37802854186
IFSC: SBIN0032385
भारतीय स्टेट बैंक
शाखाः कनक विहार, हीरापुरा, अजमेर रोड, जयपुर
पेटीएम-9887409303

माही संदेश मासिक पत्रिका से प्रशिक्षु पत्रकार/मार्केटिंग मैनेजर/ग्राफिक डिजाइनर रूप में जुड़कर समाज में अपनी पहचान बनाने का सुनहरा अवसर

पत्रकारिता में अध्ययनरत छात्र-छात्राएं और सामाजिक व साहित्यिक क्षेत्र से जुड़ी महिलाओं को प्राथमिकता

सम्पर्क : संपादक, माही संदेश, मो. 9887409303
email-mahisandesheditor@yahoo.com

तस्वीर बोल उठी-7

इस तस्वीर को देखकर आपके मन में जो भाव उमड़ रहे हैं बस उन भावों को काव्य भाषा की चार पंक्तियों में लिख डालिए। सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों को माही संदेश के अगले अंक (अंतिम तिथि 20 अक्टूबर) में प्रकाशित किया जाएगा-

तस्वीर : अनुरागी मन

रचना भेजने का पता
संपादक

माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर- 302021(राजस्थान)।
email-mahisandesh31@gmail.com

तस्वीर बोल उठी-6 के अन्तर्गत काफी संख्या में रचनाएं प्राप्त हुई सर्वश्रेष्ठ रचना को यहां प्रकाशित किया जा रहा है।

काले मेघों का गर्जन-तर्जन
नृप मयूर का दिलकश नर्तन
कर रहा है शंखनाद
सावन का हुआ आगाज

ज्ञानेन्द्र मोहन खरे
औरंगाबाद, बिहार

माही संदेश मासिक पत्रिका के सदस्य बनें और आरडी ब्यूटी पार्लर की सेवाओं पर 50 प्रतिशत की छूट पाएं

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/450/2018-20
समाचार पत्र की पंजीयन संख्या : RAJHIN/2018/75539

प्रकाशन की तिथिः माह की 1 तारीख
प्रेषण दिनांक : हर माह की 5 तारीख, सी.एस.ओ. गांधीनगर, जयपुर

सेवा में,

प्रेषक :
संपादक (माही संदेश)
50-51 ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021 (राजस्थान)।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक **रोहित कृष्ण नन्दन** द्वारा कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स, 448, बाक्लीवाल भवन, लाल जी सांड का रास्ता, जयपुर से छपवाकर माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर, अजमेर रोड, जयपुर-302021 से प्रकाशित किया। **मो. 9887409303**